# 'हम देश को समृद्धि की ओर ले जाएंगे'

## संसद में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर हुई चर्चा का जवाब

डाउनलोड करने के लिए
स्कैन करें

प्रस्तावनाः श्री जगत प्रकाश नड्डा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

भाजपा प्रकाशन विभाग

**श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति, भारत**

आज जो उपलब्धियां हमें दिखाई दे रही हैं, वे पिछले 10 वर्षों के प्रयासों का परिणाम हैं। बचपन से हम 'गरीबी हटाओ' का नारा सुनते आ रहे हैं, लेकिन अब हम अपने जीवन में पहली बार बड़े पैमाने पर गरीबी उन्मूलन के प्रयासों को देख रहे हैं।

नीति आयोग के अनुसार मेरी सरकार ने पिछले एक दशक में लगभग 25 करोड़ देशवासियों को गरीबी से बाहर निकाला है। यह एक ऐसी चीज है जो गरीबों में आत्मविश्वास पैदा करती है।

31 जनवरी, 2024

# 'हम देश को समृद्धि की ओर ले जाएंगे'

## संसद में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर हुई चर्चा का जवाब

भाजपा प्रकाशन विभाग
6-ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

# प्रकाशकीय

संसद का अंतरिम बजट सत्र कई मायनों में महत्वपूर्ण रहा। जहां संसद की संयुक्त बैठक को राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने संबोधित कर देश की अनेक उपलब्धियों को रेखांकित किया, वहीं दोनों सदनों में जिस गंभीरता से सदस्यों ने चर्चा में भागीदारी की उससे जन-जन का विश्वास भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में और भी अधिक मजबूत हुआ है। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर हुई चर्चा से पिछले दस वर्षों में देश की अद्भुत उपलब्धियां जन-जन तक पहुंची हैं। जहां चर्चा में अर्थव्यवस्था को विकास की ओर प्रवृत्त किया गया है, वहीं कांग्रेसनीत यूपीए सरकार के द्वारा छोड़ी गई समस्याओं के समाधान पर भी प्रकाश डाला गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी एवं सुदृढ़ नेतृत्व में 2014 एवं 2019 में मिला भारी जनादेश न केवल कांग्रेसनीत यूपीए काल की आर्थिक कुव्यवस्था एवं वित्तीय कुप्रबंधन से देश को बाहर निकालने का जनादेश था, बल्कि उन चुनौतियों एवं समस्याओं का समाधान कर देश के उज्ज्वल एवं गौरवपूर्ण मार्ग को प्रशस्त करने में मिली जबरदस्त सफलता का जनता द्वारा व्यापक अनुमोदन भी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 05 फरवरी, 2024 को लोकसभा में और 07 फरवरी, 2024 को राज्यसभा में संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का जवाब दिया। उन्होंने सदन के सदस्यों का राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव में अपने विचार रखने के लिए आभार जताया।

हम लोकसभा एवं राज्यसभा में उनके भाषणों के संपादित पाठ प्रकाशित कर रहे हैं। इसके साथ ही हम भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा के आभारी हैं, जिन्होंने इस पुस्तिका की 'प्रस्तावना' लिखने के हमारे अनुरोध को सहर्ष स्वीकार किया है। हमें आशा है कि हमारे पाठक इस पुस्तिका से लाभान्वित होंगे।

**प्रकाशक**

**भाजपा प्रकाशन विभाग**

मार्च, 2024 6-ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

# प्रस्तावना

भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने 31 जनवरी, 2024 को संसद के बजट सत्र की शुरुआत में नए संसद भवन में अपना पहला भाषण दिया। उन्होंने नई संसद की भव्यता की सराहना की जो भारत की संस्कृति एवं सभ्यता का प्रमाण है। इसके साथ ही उन्होंने मोदी सरकार की कल्याणकारी योजनाओं की सफलता पर प्रकाश डाला, जिसने देश में आम नागरिकों के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव किया है।

05 फरवरी, 2024 को लोकसभा में और 7 फरवरी, 2024 को राज्यसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का जवाब देते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि राष्ट्रपति का अभिभाषण तथ्यों पर आधारित एक व्यापक दस्तावेज है, जो सरकार की गतिशीलता की ओर इशारा करता है। यह भारत की प्रगति की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है। उन्होंने कहा कि हमारा देश तभी तेजी से विकसित होगा जब नारी शक्ति, युवा शक्ति, गरीब और अन्नदाता— ये चार स्तंभ विकसित और मजबूत होंगे। उनका संबोधन इन चार स्तंभों को मजबूत करके देश को 'विकसित राष्ट्र' बनाने का मार्ग प्रशस्त करने की बात करता है। प्रधानमंत्री ने अपने जवाब के दौरान संसद सदस्यों से देश के विकास के लिए कंधे से कंधा मिलाकर आगे आने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, ''मैं 'मां भारती' और इसके 140 करोड़ नागरिकों के विकास के लिए आपका समर्थन मांगता हूं।''

जैसाकि हम जानते हैं 2014 से पहले भारत में लोकतंत्र भ्रष्टाचार, जातिवाद और भाई-भतीजावाद की गिरफ्त में था। हालांकि, मोदी सरकार के आने के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी एवं गतिशील नेतृत्व में केंद्र सरकार ने भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और तुष्टीकरण के बजाय 'पॉलिटिक्स ऑफ परफॉर्मेंस' को प्राथमिकता दी है। 'राष्ट्र प्रथम' के मंत्र से प्रेरित होकर, जो भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार की नीतियों का मार्गदर्शन करता है, मोदी सरकार आज 'विकसित भारत' और लोगों एवं राष्ट्र की आकांक्षा के लिए दृढ़ता से कार्य कर रही है। कल्याणकारी योजनाओं से लेकर सांस्कृतिक पुनरुत्थान और आंतरिक सुरक्षा से लेकर एक मजबूत अर्थव्यवस्था तक, भारत ने पिछले 10 वर्षों में एक अद्वितीय बदलाव को महसूस किया है। इसके अतिरिक्त वैश्विक स्तर पर देश की स्थिति में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है।

मोदी सरकार आज लोगों के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलते हुए अपार संभावनाओं का माहौल बनाकर उनकी आकांक्षाओं को पूरा कर रही है। देश को राजनीतिक स्थिरता प्रदान करने के अलावा, उन्होंने नवीन विचारों और नई पहल के साथ देश को एक नई दिशा दी है। इस सरकार ने लगभग 11 करोड़ गरीब परिवारों को गैस सिलेंडर उपलब्ध

कराए हैं, 12 करोड़ घरों में शौचालयों का प्रावधान किया है और हर घर जल योजना के तहत 15 करोड़ घरों में पाइप से पानी उपलब्ध कराया है। मोदी सरकार ने 11 करोड़ किसानों के बैंक खातों में लगभग 3 लाख करोड़ रुपये ट्रांसफर किए, 50 करोड़ लोगों के लिए पांच लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा दिया जा रहा है और किसानों की समृद्धि के लिए धान की अधिकतम एमएसपी पर खरीद की जा रही है। इसके अलावा, इस अवधि के दौरान रिकॉर्ड 25 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर निकले हैं।

केंद्र में मोदी सरकार के सत्ता संभालने के बाद उसने आंतरिक सुरक्षा को प्राथमिकता दी और उल्फा के साथ समझौते के अलावा, उसने बोडो समूहों, यूनाइटेड पीपुल्स फ्रंट (यूपीएफ) और मणिपुर में कुकी नेशनल ऑर्गनाइजेशन, असम में कार्बी आंगलोंग समूह, नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा, और कार्बी लोंगरी एनसी हिल्स लिबरेशन फ्रंट आदि के साथ शांति समझौता किया। इस अवधि के दौरान अनुच्छेद 370 को निरस्त करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया, जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन संशोधन विधेयक 2023 और जम्मू और कश्मीर आरक्षण संशोधन विधेयक 2023 को पारित किया गया। इस सरकार ने नौ वर्षों के दौरान कई ऐसे युगांतकारी फैसले किये हैं जो इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो गये हैं।

इन सभी अभूतपूर्व उपलब्धियों के कारण आज श्री नरेन्द्र मोदी दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता हैं। उन्होंने कई पहलों के साथ देश के लिए एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण को पेश किया है जो भारत को विश्व स्तर पर अग्रणी बना रहा है। ऐसे में इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं है कि मोदी सरकार का तीसरा कार्यकाल बड़े फैसलों का गवाह बनेगा। प्रधानमंत्री ने ठीक ही कहा, "मैं देश को अगले हज़ार वर्षों तक समृद्ध और सफलता के शिखर पर पहुंचते हुए देखना चाहता हूँ। तीसरा कार्यकाल 1,000 वर्षों के लिए एक मजबूत नींव रखने के लिए समर्पित होगा।"

यह पुस्तिका भाजपा प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित की गई है और संसद के दोनों सदनों में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव में दिए गए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भाषणों पर केंद्रित है। इस पुस्तिका के माध्यम से हमारे सुधी पाठक इस बात की समझ विकसित कर सकते हैं कि कैसे मोदी सरकार ने 140 करोड़ लोगों की भलाई के लिए देश की आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने के लिए कई ऐतिहासिक फैसले लिए हैं और कैसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के ऊर्जावान नेतृत्व में आज भारत लगभग सभी क्षेत्रों में अपार प्रगति दर्ज कर रहा है और वैश्विक समुदाय की नजरों में इसे एक उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है।

**जगत प्रकाश नड्डा**
**राष्ट्रीय अध्यक्ष**
**भारतीय जनता पार्टी**

मार्च, 2024

# अनुक्रमणिका

**प्रकाशकीय**

**प्रस्तावना**

**लोकसभा**

विपक्ष द्वारा फेंकी गयी हर ईंट को मैं विकसित भारत की नींव मजबूत करने के लिए उठाऊंगाः नरेन्द्र मोदी 08

**राज्यसभा**

'हर संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाना, यह हमारी कार्यशैली का हिस्सा है' 36

# लोकसभा

## विपक्ष द्वारा फेंकी गयी हर ईंट को मैं विकसित भारत की नींव मजबूत करने के लिए उठाऊंगा: नरेन्द्र मोदी

**प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 05 फरवरी, 2024 को संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का लोकसभा में उत्तर दिया। प्रधानमंत्री ने सदन में अपने भाषण की शुरुआत 'सेंगोल' का जिक्र कर की। उन्होंने कहा कि जब राष्ट्रपति जी अपना संबोधन देने के लिए नए सदन में पहुंची, तो शान के साथ सेंगोल उनके आगे चल रहा था और बाकी सांसद उनका अनुसरण कर रहे थे। श्री मोदी ने कहा कि यह विरासत सदन की गरिमा को कई गुना बढ़ाती है। उन्होंने आगे कहा कि 75वां गणतंत्र दिवस, नया संसद भवन और 'सेंगोल' का आगमन एक बहुत ही प्रभावशाली घटना थी। श्री मोदी ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव में अपने विचार और सुझाव देने के लिए सदन के सदस्यों को धन्यवाद दिया। सदन में प्रधानमंत्री के उत्तर का संपूर्ण पाठ इस प्रकार है:**

माननीय अध्यक्ष जी, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद देने के लिए खड़ा हूं। संसद के इस नए भवन में जब आदरणीय राष्ट्रपति जी हम सबको संबोधित करने के लिए आईं, और जिस गौरव और सम्मान के साथ सेंगोल पूरे procession का नेतृत्व कर रहा था, और हम सब उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। नए सदन में यह नई परंपरा भारत की आजादी के उस पवित्र पल का प्रतिबिंब, जब साक्षी बनता है तो लोकतंत्र की गरिमा कई गुना ऊपर चली जाती है। यह 75वां गणतंत्र दिवस, इसके बाद संसद का नया भवन, सेंगोल की अगुआई, ये सारा दृश्य अपने आप में बहुत ही प्रभावी था। मैं जब वहां से

पूरे कार्यक्रम में भागीदारी कर रहा था। यहां से तो हमें उतना भव्यता नजर नहीं आती है, लेकिन वहां से जब मैंने देखा कि वाकई नए सदन में इस गरिमामयी उपस्थिति में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति द्वारा, हम सबके मन को प्रभावित करने वाला वो दृश्य हमेशा-हमेशा याद रहेगा। करीब 60 से ज्यादा माननीय सदस्यों ने राष्ट्रपति जी के आभार प्रस्ताव पर अपने अपने विचार रखे हैं। मैं विनम्रता के साथ अपने-अपने विचार व्यक्त करने वाले सभी अपने माननीय सांसदगण का आभार व्यक्त करता हूं। मैं विशेष रूप से विपक्ष ने जो संकल्प लिया है उसकी सराहना करता हूं। उनके भाषण की एक-एक बात से मेरा और देश का विश्वास पक्का हो गया है कि इन्होंने लंबे अर्से तक वहां रहने का संकल्प ले लिया है। आप कई दशक तक जैसे यहां बैठे थे, वैसे ही कई दशक तक वहां बैठने का आपका संकल्प और जनता जनार्दन तो ईश्वर का रूप होती है। और आप लोग जिस प्रकार से इन दिनों मेहनत कर रहे हैं, मैं पक्का मानता हूं कि ईश्वर रूपी जनता-जनार्दन आपको जरूर आशीर्वाद देगी। और आप जिस ऊंचाई पर हैं उससे भी अधिक ऊंचाई पर जरूर पहुंचेंगे और अगले चुनाव में दर्शक दीर्घा में दिखेंगे।

राष्ट्रपति जी का भाषण एक प्रकार से तथ्यों के आधार पर, हकीकतों के आधार पर एक बहुत बड़ा दस्तावेज़ है, जो देश के सामने राष्ट्रपति जी ने रखा है

मैं देख रहा हूं कि आप में से बहुत लोग चुनाव लड़ने का हौसला भी खो चुके हैं, और मैंने सुना है बहुत लोग पिछली बार भी सीट बदली, इस बार भी सीट बदलने की फिराक में हैं। और मैंने सुना है, बहुत से लोग अब लोकसभा की बजाय राज्यसभा में जाना चाहते हैं तो स्थितियों का आकलन करके वो अपना-अपना रास्ता ढूंढ रहे हैं।

## नारी शक्ति, देश की युवा शक्ति

राष्ट्रपति जी का भाषण एक प्रकार से तथ्यों के आधार पर, हकीकतों के आधार पर एक बहुत बड़ा दस्तावेज़ है, जो देश के सामने राष्ट्रपति जी ने रखा है और इस पूरे दस्तावेज़ को आप देखेंगे तो उन हकीकतों को समेटने

का प्रयास किया है, जिससे देश किस स्पीड से प्रगति कर रहा है, किस स्केल के साथ गतिविधियों का विस्तार हो रहा है, उसका लेखा-जोखा राष्ट्रपति जी ने प्रस्तुत किया है। आदरणीय राष्ट्रपति जी ने भारत के उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखते हुए चार मजबूत स्तंभों पर हम सबका ध्यान केंद्रित किया है, और उनका सही-सही आकलन है कि देश के चार स्तम्भ जितने ज्यादा मजबूत होंगे, जितने ज्यादा विकसित होंगे, जितने ज्यादा समृद्ध होंगे, हमारा देश उतना ही समृद्ध होगा, उतना ही तेजी से समृद्ध होगा। और उन्होंने इन 4 स्तंभों का उल्लेख करते हुए देश की नारी शक्ति, देश की युवा शक्ति, देश के हमारे गरीब भाई-बहन, और देश के हमारे किसान, हमारे मछुआरे, हमारे पशुपालक उनकी चर्चा की है। इनके सशक्तीकरण के माध्यम से राष्ट्र के विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के जो राह हैं उसका स्पष्ट दिशानिर्देश आदरणीय राष्ट्रपति जी ने कहा है।

अच्छा होता, हो सकता है आपके यहां fisherman minority में न हों, हो सकता है आपके यहां पशुपालक minority में न हों, हो सकता है किसान आपके यहां minority में न हों, हो सकता है महिलाएं आपके यहां minority में न हों, हो सकता है कि आपके यहां युवा minority में न हों। ये क्या इस देश के युवा की बात होती है? समाज के सब वर्ग नहीं होते हैं। क्या देश की नारी की बात होती है? देश की सभी नारी नहीं होती हैं। कब तक टुकड़ों में सोचते रहोगे, कब तक समाज को बांटते रहोगे।

**अच्छा होता कि जाते-जाते तो कम से कम इस चर्चा के दरमियान कुछ सकारात्मक बातें होतीं। कुछ सकारात्मक सुझाव आते, लेकिन हर बार की तरह आप सब साथियों ने देश को बहुत निराश किया है**

अच्छा होता कि जाते-जाते तो कम से कम इस चर्चा के दरमियान कुछ सकारात्मक बातें होतीं। कुछ सकारात्मक सुझाव आते, लेकिन हर बार की तरह आप सब साथियों ने देश को बहुत निराश किया है, क्योंकि आपकी सोच की मर्यादा देश समझता रहा है। उसको बार-बार दर्द होता है कि ये दशा है इनकी। इनकी सोचने की मर्यादा इतनी है।

नेता तो बदल गए, लेकिन टैप रिकॉर्डर वही बज रही है। वही बातें, कोई

नयी बात आती नहीं और पुरानी ढपली और पुराना राग, वही चलता रहता है आपका। चुनाव का वर्ष था थोड़ी मेहनत करते, कुछ नया निकालकर लाते, जनता को जरा संदेश दे पाते। चलिए ये भी मैं सिखाता हूं।

## कांग्रेस विपक्ष का दायित्व निभाने में पूरी तरह विफल

आज विपक्ष की जो हालत हुई है ना, इसकी सबसे दोषी कांग्रेस पार्टी है। कांग्रेस को एक अच्छा विपक्ष बनने का बहुत बड़ा अवसर मिला और 10 साल कम नहीं होते हैं लेकिन 10 साल में उस दायित्व को निभाने में भी वे पूरी तरह विफल रहे। और जब खुद विफल हो गए तो विपक्ष में और भी होनहार लोग हैं, उनको भी उभरने नहीं दिया, क्योंकि फिर मामला और गड़बड़ हो जाए, इसलिए हर बार यही करते रहे कि और भी विपक्ष के जो तेजस्वी लोग हैं उनको दबा दिया जाए। हाउस में कई यंग हमारे माननीय सांसदगण हैं। उत्साह भी उमंग भी है, लेकिन अगर वो बोलें, उनकी छवि उभर जाए तो शायद किसी की छवि बहुत दब जाए। उस चिंता में इस young generation को मौका न मिले, हाउस को चलने नहीं दिए गए। यानी एक प्रकार से इतना बड़ा नुकसान कर दिया है। खुद का भी, विपक्ष का भी, संसद का भी और देश का भी और इसलिए और मैं हमेशा चाहता हूं कि देश को एक स्वस्थ अच्छे विपक्ष की बहुत जरूरत है। देश ने जितना परिवारवाद का खामियाजा उठाया है और उसका खामियाजा खुद कांग्रेस ने भी उठाया है। अब हालत देखिए, हमारे खड़गे जी इस सदन से उस सदन शिफ्ट हो गए और गुलाम नबी जी तो पार्टी से ही शिफ्ट कर गए। ये सब परिवारवाद की भेंट चढ़ गए। एक ही प्रोडक्ट बार बार लॉन्च करने के चक्कर में कांग्रेस की दुकान पर ताला लगने की नौबत आ गई है। और ये दुकान हम नहीं कह रहे आप लोग कह रहे हैं। आप लोग कहते हैं दुकान खोली है, सब जगह पर बोलते हैं। दुकान पर ताला लगने की बात आ गई है।

> कांग्रेस को एक अच्छा विपक्ष बनने का बहुत बड़ा अवसर मिला और 10 साल कम नहीं होते हैं, लेकिन 10 साल में उस दायित्व को निभाने में भी वे पूरी तरह विफल रहे

यहां हमारे दादा अपनी आदत छोड़ नहीं पाते हैं वो वहां से बैठे-बैठे कमेंट कर रहे हैं परिवारवाद की, मैं जरा समझा देता हूं आज, हम किस परिवारवाद की चर्चा करते हैं। अगर किसी परिवार में अपने बलबूते पर जनसमर्थन से एक से अधिक अनेक लोग अगर राजनीतिक क्षेत्र में भी प्रगति करते हैं। उसको हमने कभी परिवारवाद नहीं कहा है। हम परिवारवाद की चर्चा वो करते हैं जो पार्टी परिवार चलाता है, जो पार्टी परिवार के लोगों को प्राथमिकता देती है। जो पार्टी के सारे निर्णय परिवार के लोग ही करते हैं। वो परिवारवाद है। न राजनाथ जी की कोई political party है, ना अमित शाह की कोई political party है और इसलिए जहां एक परिवार की दो पार्टियां लिखी जाती हैं, वो लोकतंत्र में उचित नहीं है। एक परिवार के दस लोग राजनीति में आए कुछ बुरा नहीं है। हम तो चाहते हैं, नौजवान लोग आएं। हम भी चाहते हैं, इसकी चर्चा करिए। देश के लोकतंत्र के लिए परिवारवादी राजनीति, परिवारिक पार्टियों की राजनीति, ये हम सबकी चिंता का विषय होना चाहिए और इसलिए मैं किसी परिवार के 2 लोग अगर प्रगति करते हैं, उसका तो मैं स्वागत करूंगा, 10 लोग प्रगति करें, मैं स्वागत करूंगा। देश में जितनी नई पीढ़ी, अच्छे लोग आए, स्वागत योग्य है। सवाल ये है कि परिवार ही पार्टियां चलाती हैं। पक्का है, ये अध्यक्ष नहीं होगा तो उसका बेटा होगा, ये नहीं है होगा तो उसका बेटा होगा। ये लोकतंत्र को खतरा है और इसलिए अच्छा हुआ, दादा थैंक यू, ये विषय कभी बोलता नहीं था, आज बोल भी दिया मैंने। एक ही प्रोडक्ट को बार-बार launch करने का भरपूर प्रयास हो रहा है।

देश के लोकतंत्र के लिए परिवारवादी राजनीति, परिवारिक पार्टियों की राजनीति, ये हम सबकी चिंता का विषय होना चाहिए

कांग्रेस एक परिवार में उलझ गई है, देश के करोड़ों परिवारों की आकांक्षाएं और उपलब्धियां वो देख पा ही नहीं रहे हैं, देख सकते नहीं, अपने परिवार के बाहर देखने की तैयारी नहीं है और कांग्रेस में एक कैंसिल कल्चर डेवलप हुआ है, कुछ भी है– कैंसिल, कुछ भी है – कैंसिल। एक ऐसे कैंसिल कल्चर में

कांग्रेस फंस गई है। अगर हम कहते हैं कि मेक इन इंडिया तो कांग्रेस कहती है कैंसिल, हम कहते हैं– 'आत्मनिर्भर भारत' कांग्रेस कहती है कैंसिल, हम कहते हैं वोकल फॉर लोकल, कांग्रेस कहती है कैंसिल, हम कहते हैं– वंदे भारत ट्रेन, कांग्रेस कहती है कैंसिल, हम कहते हैं संसद की नई इमारत, कांग्रेस कहती है कैंसिल। यानी मैं हैरान हूं, ये कोई मोदी की उपलब्धियां नहीं हैं, ये देश की उपलब्धियां हैं। इतनी नफरत, कब तक पाले रखोगे और उसके कारण देश की सफलताएं, देश के achievement उसको भी कैंसिल करके आप बैठ गए हो।

## विकसित भारत का रोडमैप

राष्ट्रपति जी ने विकसित भारत के रोडमैप पर चर्चा करते हुए आर्थिक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। अर्थव्यवस्था के जो मूलभूत आधार हैं, उस पर बारीकी से चर्चा की और भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था को आज पूरी दुनिया सराह रही है, पूरी दुनिया उससे प्रभावित है, और जब विश्व संकट से गुजर रहा है, तब तो उनको और ज्यादा अच्छा लगता है। जी-20 समिट के अंदर सारे देश ने देखा है कि पूरा विश्व भारत के लिए क्या सोचता है, क्या कहता है, क्या करता है। और इन सारे 10 साल के कार्यकाल के अनुभव के आधार पर आज की मजबूत अर्थव्यवस्था को देखते हुए जिस तेज गति से भारत विकास कर रहा है, उसकी बारीकियों को जानते हुए मैं विश्वास से कहता हूं और इसीलिए मैंने कहा है कि हमारे तीसरे टर्म में भारत दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक ताकत बनेगा, और ये मोदी की गारंटी है।

भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था को आज पूरी दुनिया सराह रही है, पूरी दुनिया उससे प्रभावित है और जब विश्व संकट से गुजर रहा है, तब तो उनको और ज्यादा अच्छा लगता है

इनको पहले मौका नहीं दिया था क्या? सबको मौका दिया है ना...हा।

जब हम दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बनकर उभरेंगे, कहते हैं, तो हमारे विपक्ष में बैठे कुछ साथी कैसा कुतर्क देते हैं, वो कहते हैं – इसमें

क्या है ये तो अपने आप हो जाएगा। क्या कमाल है आप लोगों का, मोदी का क्या है, ये तो अपने आप हो जाएगा। मैं जरा सरकार की भूमिका क्या होती है, इस सदन के माध्यम से देश को और विशेषकर देश के युवा मन को बताना चाहता हूं, देश की युवा शक्तियों को बताना चाहता हूं कि होता कैसे है और सरकार की भूमिका क्या होती है।

10 साल पहले 2014 में फरवरी महीने में जो Interim Budget आया था, उस समय कौन लोग बैठे थे, आपको तो मालूम ही है, देश को भी मालूम है। जो 10 साल पहले Interim Budget आया था, उसे पेश करते समय उस समय के वित्त मंत्री ने जो कहा था, मैं उसको कोट कर रहा हूं, और एक-एक शब्द बड़ा मूल्यवान है जी। जब आप लोग कहते हैं ना कि ये तो अपने आप तीसरे नंबर पर चला ही जाएगा, ऐसा कहते हैं उनको जरा समझना चाहिए। ये उन्होंने क्या कहा था— I now wish to look forward and outline a vision for the future, vision for the future. पूरे ब्रह्मांड के सबसे बड़े अर्थशास्त्री बोल रहे थे— I now wish to look forward and outline a vision for the future. आगे कहते हैं— I wonder how many have noted the fact that India's economy in terms of size of its GDP is the 11th largest in the world. यानी 2014 में 11 नंबर पहुंचने पर क्या गौरवगान होता था। आज 5 पर पहुंच गए और आपको क्या हो रहा है।

**मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि 30 साल हम नहीं लगने देंगे– ये मोदी की गारंटी है, मेरे तीसरे कार्यकाल में देश दुनिया तीसरी आर्थिक शक्ति बन जाएगा**

मैं आगे पढ़ रहा हूं ध्यान से सुनिए। साथियों ध्यान से सुनिए। उन्होंने कहा था– It is 11th largest in the world, बड़ी गौरव की बात थी। There are great things in the stone. फिर आगे कहते हैं – There is a well argued view that in the next three decades, India's nominal GDP will take the country to the 3rd rank after

the US and China. उस समय ये ब्रह्मांड के बड़े अर्थशास्त्री कह रहे थे कि तीसरे नंबर पर तीस साल में हम पहुंच जाएंगे, बहुत लोग हैं जो ये ख्यालों में रहते हैं, वो ब्रह्मांड के सबसे बड़े अर्थशास्त्री है। ये लोग 2014 में कह रहे हैं और vision क्या देखते हैं कि अरे 2044 यानी 2044 तक तीसरी अर्थव्यवस्था की बात ये इनकी सोच, ये इनकी मर्यादा। सपना ही देखने का सामर्थ्य खो चुके थे ये लोग, संकल्प तो दूर की बात थी। तीस साल का इंतजार करने के लिए मेरे देश की युवा पीढ़ी को ये कहकर गए थे, लेकिन हम आज आपके सामने विश्वास से खड़े हैं, इस पवित्र सदन में खड़े हैं। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि 30 साल हम नहीं लगने देंगे– ये मोदी की गारंटी है, मेरे तीसरे कार्यकाल में देश दुनिया की तीसरी आर्थिक शक्ति बन जाएगा। कैसे लक्ष्य रखते थे, इनकी सोच कहा तक जाती थी, दया आती है। और आप लोग 11 नंबर पर बड़ा गर्व कर रहे थे, हम 5 नंबर पर पहुंचा दिए जी, लेकिन अगर 11 पर पहुंचने से आपको खुशी होती थी, तो 5 नंबर पहुंचने पर भी खुशी होनी चाहिए, देश 5 नंबर पर पहुंचा है, आपको खुशी होनी चाहिए, किस बीमारी में फंसे पड़े हो आप।

**हमने 17 करोड़ अधिक गैस कनेक्शन दिए, मैं 10 साल का हिसाब दे रहा हूं। अगर कांग्रेस की चाल से चलते तो ये कनेक्शन देने में और 60 साल लग जाते, 3 पीढ़ियां धुएं में खाना पकाते-पकाते गुजर जातीं**

भाजपा सरकार की काम करने की स्पीड, हमारे लक्ष्य कितने बड़े होते हैं, हमारा हौसला कितना बड़ा होता है, वो आज पूरी दुनिया देख रही है।

हमारे उत्तर प्रदेश में खास यह कहावत कही जाती है — नौ दिन चले अढ़ाई कोस और मुझे लगता है कि यह कहावत पूरी तरह कांग्रेस को परिभाषित कर देती है। ये कांग्रेस की सुस्त रफ्तार का कोई मुकाबला नहीं है। आज देश में जिस रफ्तार से काम हो रहा है, कांग्रेस सरकार इस रफ्तार की कल्पना भी नहीं कर सकती है।

शहरी गरीबों के लिए, हमने गरीबों के लिए 4 करोड़ घर बनाए और शहरी

गरीबों के लिए 80 लाख पक्के मकान बने। अगर कांग्रेस की रफ्तार से ये घर बने होते तो क्या हुआ होता मैं इसका हिसाब लगाता हूं, अगर कांग्रेस की जो रफ्तार थी, उस प्रकार चला होता तो 100 साल लगते इतना काम करने में, 100 साल लगते। पांच पीढ़ियां गुजर जातीं।

10 वर्ष में 40 हजार किलोमीटर रेलवे ट्रैक का electrification हुआ। अगर कांग्रेस की रफ्तार से देश चलता, इस काम को करने में 80 साल लग जाते, एक प्रकार से 4 पीढ़ियां गुजर जातीं।

हमने 17 करोड़ अधिक गैस कनेक्शन दिए, ये मैं 10 साल का हिसाब दे रहा हूं। अगर कांग्रेस की चाल से चलते तो ये कनेक्शन देने में और 60 साल लग जाते, 3 पीढ़ियां धुएं में खाना पकाते-पकाते गुजर जातीं।

हमारी सरकार में सेनिटेशन कवरेज 40 परसेंट से 100 पर्सेंट तक पहुंची है। अगर कांग्रेस की रफ्तार होती तो ये काम होते-होते 60-70 साल और लगते और कम से कम तीन पीढ़ियां गुजर जातीं।

**कांग्रेस की जो मानसिकता है, जिससे देश को बहुत नुकसान हुआ है। कांग्रेस ने देश के सामर्थ्य पर कभी भी विश्वास नहीं किया है, वे अपने-आपको शासक मानते रहे और जनता-जनार्दन को हमेशा कमतर आंकते गए, छोटा आंकते गए**

## कांग्रेस ने देश के सामर्थ्य पर कभी भी विश्वास नहीं किया

कांग्रेस की जो मानसिकता है, जिससे देश को बहुत नुकसान हुआ है। कांग्रेस ने देश के सामर्थ्य पर कभी भी विश्वास नहीं किया है, वे अपने-आपको शासक मानते रहे और जनता-जनार्दन को हमेशा कमतर आंकते गए, छोटा आंकते गए।

देश के नागरिकों के लिए कैसा सोचते थे, मैं जानता हूं, मैं नाम बोलूंगा तो उनको जरा चुभन होगी, लेकिन 15 अगस्त, लाल किले से प्रधानमंत्री नेहरू ने जो कहा था, वो मैं जरा पढ़ता हूं— लाल किले से भारत के प्रथम प्रधानमंत्री ने जो कहा था, वो पढ़ रहा हूं, नेहरू जी ने कहा था, ''हिन्दुस्तान

में काफी मेहनत करने की आदत आमतौर से नहीं है। हम इतना काम नहीं करते थे, जितना कि यूरोप वाले या जापान वाले, या चीन वाले, या रूस वाले, या अमेरिका वाले करते हैं।'' ये नेहरू जी लाल किले से बोल रहे हैं। "ये न समझिए कि वो कौमें कोई जादू से खुशहाल हो गईं, वो मेहनत से हुई हैं और अक्ल से हुई हैं।'' ये उनको सर्टिफिकेट दे रहे हैं, भारत के लोगों को नीचा दिखा रहे हैं। यानी नेहरू जी की भारतीयों के प्रति सोच थी कि भारतीय आलसी हैं। नेहरू जी की भारतीयों के लिए सोच थी कि भारतीय कम अक्ल के लोग होते हैं।

> कांग्रेस का विश्वास हमेशा सिर्फ एक परिवार पर रहा है। एक परिवार के आगे वे न कुछ सोच सकते हैं, न कुछ देख सकते हैं। कुछ दिन पहले भानुमति का कुनबा जोड़ा, लेकिन फिर 'एकला चलो रे' करने लग गए

इंदिरा जी की सोच भी उससे ज्यादा अलग नहीं थी। इंदिरा जी ने लाल किले से 15 अगस्त को कहा था- "दुर्भाग्यवश हमारी आदत ये है कि जब कोई शुभ काम पूरा होने को होता है तो हम आत्मतुष्टि की भावना से ग्रस्त हो जाते हैं और जब कोई कठिनाई आ जाती है तो हम नाउम्मीद हो जाते हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगने लगता है कि पूरे राष्ट्र ने ही पराजय भावना को अपना लिया है।'' आज कांग्रेस के लोगों को देख करके लगता है कि इंदिरा जी भले देश के लोगों का आकलन सही न कर पाईं, लेकिन कांग्रेस का एकदम सटीक आकलन उन्होंने किया था। कांग्रेस के शाही परिवार के लोग मेरे देश के लोगों को ऐसा ही समझते थे, क्योंकि वे सब ऐसे ही थे और आज भी वही सोच देखने को मिलती है।

## कांग्रेस का विश्वास हमेशा सिर्फ एक परिवार पर रहा

कांग्रेस का विश्वास हमेशा सिर्फ एक परिवार पर रहा है। एक परिवार के आगे वे न कुछ सोच सकते हैं, न कुछ देख सकते हैं। कुछ दिन पहले भानुमति का कुनबा जोड़ा, लेकिन फिर 'एकला चलो रे' करने लग गए। कांग्रेस के लोगों ने नया-नया मोटर-मैकनिक का काम सीखा है और इसलिए

alignment क्या होता है उसका ध्यान तो हो गया होगा, लेकिन मैं देख रहा हूं Alliance का ही alignment बिगड़ गया। इनको अपने इस कुनबे में अगर एक-दूसरे पर विश्वास नहीं है, तो ये लोग देश पर विश्वास कैसे करेंगे।

हमें देश के सामर्थ्य पर भरोसा है, हमें लोगों की शक्ति पर भरोसा है।

देश की जनता ने हमें जब पहली बार सेवा करने का अवसर दिया तो हमने पहले कार्यकाल में यूपीए के समय के जो गड्ढे थे, वो गड्ढे भरने में हमारा काफी समय और शक्ति लगी। हम पहले कार्यकाल में वो गड्ढे भरते रहे। हमने दूसरे कार्यकाल में नए भारत की नींव रखी और तीसरे कार्यकाल में हम विकसित भारत के निर्माण को नई गति देंगे।

पहले कार्यकाल में हमने स्वच्छ भारत, उज्ज्वला, आयुष्मान भारत, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, उसी प्रकार से सुगम्य भारत, डिजिटल इंडिया...ऐसे कितने ही जनहित के कामों को अभियान का स्वरूप दे करके आगे बढ़ाया। टैक्स व्यवस्था आसान हो, इसके लिए जीएसटी जैसे निर्णय लिए। और हमारे इन कामों को देख करके जनता ने भरपूर समर्थन दिया। जनता ने बहुत आशीर्वाद दिए। पहले से भी ज्यादा आशीर्वाद दिए और हमारा दूसरा कार्यकाल प्रारंभ हुआ। दूसरा कार्यकाल संकल्पों और वचनों की पूर्ति का कार्यकाल रहा। जिन उपलब्धियों का देश लंबे समय से इंतजार कर रहा था वो सारे काम हमने दूसरे कार्यकाल में पूरे होते देखे हैं। हम सबने 370 खत्म होते हुए देखा है, इन्हीं माननीय सांसदों की आंखों के सामने और उनके वोट की ताकत से 370 गया। नारी शक्ति वंदन अधिनियम, ये दूसरे कार्यकाल में कानून बना।

**अंतरिक्ष से ले करके ओलंपिक तक, सशक्त बलों से संसद तक नारी शक्ति के सामर्थ्य की गूंज उठ रही है। ये नारी शक्ति के सशक्तीकरण को आज देश ने देखा है**

अंतरिक्ष से ले करके ओलंपिक तक, सशक्त बलों से संसद तक नारी शक्ति के सामर्थ्य की गूंज उठ रही है। ये नारी शक्ति के सशक्तीकरण को आज देश ने देखा है।

उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक लोगों ने दशकों से अटकी,

भटकी, लटकी योजनाओं को समयबद्ध तरीके से पूरे होते हुए देखा है।

अंग्रेजी शासन के पुराने कानून जो दंड प्रधान थे, उन दंड प्रधान कानूनों से हट करके हमने न्याय संहिता तक प्रगति की है। हमारी सरकार ने सैकड़ों ऐसे कानूनों को समाप्त किया, जो अप्रासंगिक हो गए थे। सरकार ने 40 हजार से ज्यादा compliances खत्म कर दिए।

भारत ने अमृत भारत और नमो भारत ट्रेनों से भविष्य की उन्नति के सपने देखे हैं।

देश के गांव-गांव ने, देश के कोटि-कोटि जनों ने विकसित भारत की संकल्प यात्रा देखी है और saturation के पीछे कितनी मेहनत की जाती है, उसके हक की चीज उसको मिले, उसके दरवाजे पर दस्तक देकर करके देने का प्रयास देश पहली बार देख रहा है।

**मैंने हमेशा कहा है कि गरीब को अगर साधन मिले, गरीब को अगर संसाधन मिले, गरीब को अगर स्वाभिमान मिले तो हमारा गरीब गरीबी को परास्त करने का सामर्थ्य रखता है**

भगवान राम न सिर्फ अपने घर लौटे, बल्कि एक ऐसे मंदिर का निर्माण हुआ, जो भारत की महान सांस्कृतिक परंपरा को नई ऊर्जा देता रहेगा।

अब हमारी सरकार का तीसरा कार्यकाल भी बहुत दूर नहीं है। ज्यादा से ज्यादा सौ–सवा सौ दिन बाकी हैं। पूरा देश कह रहा है– अबकी बार मोदी सरकार, खड़गे जी भी कह रहे हैं– अबकी बार मोदी सरकार, लेकिन मैं आम तौर पर ये आंकड़े-वाकड़े के चक्कर में नहीं पड़ता हूं, लेकिन मैं देख रहा हूं, देश का मिजाज, एनडीए को 400 पार करवाकर ही रहेगा। लेकिन भारतीय जनता पार्टी को 370 सीट अवश्य देगा। बीजेपी को 370 सीट और एनडीए को 400 पार।

## हमारा तीसरा कार्यकाल बहुत बड़े फैसलों का होगा

हमारा तीसरा कार्यकाल बहुत बड़े फैसलों का होगा। मैंने लाल किले से कहा था और राम मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा के समय भी मैंने उसको दोहराया था। मैंने कहा था— देश को अगले हजार वर्षों तक समृद्ध और सिद्धि के शिखर

पर देखना चाहता हूं। तीसरा कार्यकाल अगले एक हजार वर्षों के लिए एक मजबूत नींव रखने का कार्यकाल बनेगा।

मैं भारतवासियों के लिए, उनके भविष्य के लिए बहुत ही विश्वास से भरा हुआ हूं। मेरा देश के 140 करोड़ नागरिकों के सामर्थ्य पर अपार भरोसा है, मेरा बहुत विश्वास है। 10 वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं, ये सामर्थ्य दिखाता है।

मैंने हमेशा कहा है कि गरीब को अगर साधन मिले, गरीब को अगर संसाधन मिले, गरीब को अगर स्वाभिमान मिले तो हमारा गरीब गरीबी को परास्त करने का सामर्थ्य रखता है और हमने वो रास्ता चुना और मेरे गरीब भाइयों ने गरीबी को परास्त करके दिखाया है। और इसी सोच के साथ हमने गरीब को साधन दिये, संसाधन दिये, सम्मान दिया, स्वाभिमान दिया। 50 करोड़ गरीबों के पास आज बैंक खाता है। कभी वो बैंक से गुजर भी नहीं पाते थे।

**जब मैं वोकल फॉर लोकल की बात करता हूं, जब मैं मेक इन इंडिया की बात करता हूं, तब मैं करोड़ों गृह उद्योग, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग उससे जुड़े हुए मेरे लाखों परिवारों के साथ उनके कल्याण के लिए सोचता हूं**

4 करोड़ गरीबों के पास पक्का घर है और वो घर उसके स्वाभिमान को एक नया सामर्थ्य देता है। 11 करोड़ से अधिक परिवारों को पीने का शुद्ध जल पानी नल से मिल रहा है। 55 करोड़ से अधिक गरीबों को 'आयुष्मान भारत कार्ड' मिला है। घर में कोई भी बीमारी आ जाए, उस बीमारी के कारण फिर से गरीबी की तरफ लुढ़क न जाए, उसको भरोसा है कितनी भी बीमारी क्यों न आ जाए, मोदी बैठा है। 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज की सुविधा दी गई है।

मोदी ने उनको पूछा जिनको पहले कोई पूछता तक नहीं था। देश में पहली बार रेहड़ी-पटरी वाले साथियों के बारे में सोचा गया। 'पीएम स्वनिधि योजना' से आज वो ब्याज के चक्कर से बाहर निकले, बैंक से पैसे लेकर अपने कारोबार को बढ़ा रहे हैं। देश में पहली बार हाथ का हुनर जिनका सामर्थ्य है, जो राष्ट्र का निर्माण भी करते हैं, ऐसे मेरे विश्वकर्मा साथियों के बारे में सोचा गया। उनको आधुनिक टूल, आधुनिक ट्रेनिंग, पैसों की मदद, विश्व

मार्किट उनके लिए खुल जाए, ये मेरे विश्वकर्मा भाइयों के लिए हमने किया है। देश में पहली बार PVTG यानी जनजातियों में भी अति पिछड़े जो हमारे जो भाई-बहन हैं, संख्या बहुत कम है, वोट के हिसाब से किसी को नजर नहीं जाती, हम वोट से परे हैं, हम दिलों से जुड़े हैं और इसलिए PVTG जातियों के लिए पीएम जनमन योजना बनाकर के उनके कल्याण का मिशन मोड में काम उठाया है। इतना ही नहीं, सरहद के जो गांव थे, जिनको आखिरी गांव करके छोड़ दिया गया था, हमने उस आखिरी गांव को पहला गांव बनाकर के विकास की पूरी दिशा बदल दी।

**कांग्रेस पार्टी ने, यूपीए सरकार ने ओबीसी समुदाय के साथ भी कोई न्याय नहीं किया है, अन्याय किया है। इन लोगों ने ओबीसी नेताओं का अपमान करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है**

मैं जब बार-बार मिलेट्स की वकालत करता हूं, मिलेट्स की दुनिया के अंदर जा करके चर्चा करता हूं। जी-20 के देशों के लोगों के सामने गर्व के साथ मिलेट्स परोसता हूं, उसके पीछे मेरे दिल में 3 करोड़ से ज्यादा मेरे छोटे किसान हैं जो मिलेट्स की खेती करते हैं, इनका कल्याण इससे हम जुड़े हुए हैं।

## वोकल फॉर लोकल

जब मैं वोकल फॉर लोकल की बात करता हूं, जब मैं मेक इन इंडिया की बात करता हूं, तब मैं करोड़ों गृह उद्योग, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग उससे जुड़े हुए मेरे लाखों परिवारों के साथ उनके कल्याण के लिए सोचता हूं।

खादी, कांग्रेस पार्टी ने उसको भुला दिया, सरकारों ने भुला दिया। आज मैं खादी को ताकत देने में सफलतापूर्वक आगे बढ़ा हूं क्योंकि खादी के साथ हैंडलूम के साथ करोड़ों बुनकरों की जिंदगी लगी हुई है, मैं उनके कल्याण को देखता हूं।

हमारी सरकार हर कोने में गरीबी को निकालने के लिए, गरीब को समृद्ध बनाने के लिए अनेक विविध प्रयासों को कर रही है। जिनके लिए वोट बैंक ही सब कुछ था, उनके लिए उनका कल्याण संभव नहीं था। हमारे लिए उनका

कल्याण राष्ट्र का कल्याण है और इसलिए हम उसी रास्ते पर चल पड़े हैं।

कांग्रेस पार्टी ने, यूपीए सरकार ने ओबीसी समुदाय के साथ भी कोई न्याय नहीं किया है, अन्याय किया है। इन लोगों ने ओबीसी नेताओं का अपमान करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। कुछ दिन पहले जब कर्पूरी ठाकुर जी को भारत रत्न दिया, हमने वो सम्मान दिया, लेकिन याद करिये, उस कर्पूरी ठाकुर अति पिछड़े समाज से ओबीसी समाज के उस महापुरुष के साथ क्या व्यवहार हुआ था। किस प्रकार से उनके साथ जुल्म किया। 1970 में बिहार के मुख्यमंत्री बने, तो उनको पद से हटाने के लिए कैसे-कैसे खेल खेले गए थे। उनकी सरकार को अस्थिर करने के लिए क्या कुछ नहीं किया गया था।

कांग्रेस को अति पिछड़ा वर्ग का व्यक्ति बर्दाश्त नहीं हुआ था। 1987 में जब कांग्रेस के पास पूरे देश में उनका झंडा फहरता था, सत्ता ही सत्ता ही थी। तब उन्होंने कर्पूरी ठाकुर को प्रतिपक्ष के नेता के रूप में स्वीकार करने से मना कर दिया और कारण क्या दिया, वो संविधान का सम्मान नहीं कर सकते। जिस कर्पूरी ठाकुर ने पूरा जीवन लोकतंत्र के सिद्धांतों के लिए, संविधान की मर्यादाओं के लिए खपा दिया, उनको अपमान करने का काम कांग्रेस पार्टी ने किया था।

**हिन्दुस्तान में कोई ऐसा सेक्टर नहीं है, जहां देश की बेटियों के लिए दरवाजे बंद हों। आज हमारे देश की बेटियां फाइटर जेट भी उड़ा रही हैं और हमारे देश की सीमाओं को भी सुरक्षित रख रही हैं**

कांग्रेस के हमारे साथी, आजकल इस पर बहुत चिंता जताते हैं कि सरकार में ओबीसी कितने लोग हैं, कितने पद पर कहां हैं, उसका हिसाब-किताब करते रहते हैं, लेकिन मैं हैरान हूं, उनको इतना सबसे बड़ा ओबीसी नजर नहीं आता। कहां आंखें बंद करके बैठ जाते हैं।

वो ये दुनिया भर की चीजें करते हैं, मैं उनको कहना चाहता हूं। ये यूपीए के समय एक extra constitutional body बनाई गई थी, जिसके सामने सरकार की कुछ नहीं चलती थी। National Advisory Council, जरा कोई निकाल करके देखे इसमें क्या कोई ओबीसी था क्या? जरा निकाल कर देखिए। इतनी बड़ी पावरफुल बॉडी बनाई थी और उधर appoint कर रहे

थे।

## पिछले 10 वर्षों में नारी शक्ति के सशक्तीकरण को लेकर अनेक कदम उठाए गए

पिछले 10 वर्षों में नारी शक्ति के सशक्तीकरण को लेकर अनेक कदम उठाए गए हैं। नारी के नेतृत्व में समाज के सशक्तीकरण पर काम किया गया है। हिन्दुस्तान में कोई ऐसा सेक्टर नहीं है, जहां देश की बेटियों के लिए दरवाजे बंद हों। आज हमारे देश की बेटियां फाइटर जेट भी उड़ा रही हैं और हमारे देश की सीमाओं को भी सुरक्षित रख रही हैं।

ग्रामीण व्यवस्था, अर्थव्यवस्था हमारी Women Self Help Group 10 करोड़ बहनें जुड़ी हैं और आर्थिक गतिविधि करती हैं। और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को वो नई ताकत दे रही हैं और मुझे आज खुशी है, इन प्रयासों का परिणाम हैं कि आज करीब-करीब 1 करोड़ लखपति दीदी देश में बनी हैं और मेरी जब उनसे बात होती हैं, उनका जो आत्मविश्वास देखता हूं, मेरा पक्का विश्वास है हम जिस तरह आगे बढ़ रहे हैं, आने वाले हमारे कार्यकाल में 3 करोड़ लखपति दीदी हमारे देश के अंदर देखेंगे। आप कल्पना कर सकते हैं कि गांव की अर्थव्यवस्था में कितना बड़ा बदलाव हो जाएगा।

> एक समय था, जब सवाल पूछा जाता था कि बेटी की उम्र बढ़ रही है, शादी कब करोगी। आज पूछा जाता है बेटी पर्सनल और प्रोफेशनल दोनों कामों को संतुलित कितना बढ़िया करती हो, कैसे करती हो?

हमारे देश में बेटियों के संबंध में जो पहले सोच थी, समाज के घर में घुस गई थी, दिमाग में भी घुस गई थी। आज वो सोच कितनी तेजी से बदल रही है। थोड़े से बारीकी से देखेंगे तो हमें पता चलेगा कितना बड़ा सुखद बदलाव आ रहा है। पहले अगर बेटी का जन्म होता था, तो चर्चा होती थी, अरे! खर्चा कैसे उठाएंगे। उसको कैसे पढ़ाएंगे, उसके आगे की जिंदगी का, एक प्रकार से कोई बोझ है, ऐसी चर्चाएं हुआ करती थीं। आज बेटी पैदा होती है तो पूछा जाता है, अरे! सुकन्या समृद्धि अकाउंट खुला है कि नहीं खुला। बदलाव आया है।

पहले सवाल होता था, प्रेग्नेंट होने पर नौकरी नहीं कर पाओगी। आज कहा जाता है 26 हफ्ते की पेड लीव और बाद में भी अगर छुट्टी चाहिए तो मिलेगी, ये बदलाव होता है। पहले समाज में सवाल होते थे कि महिला होकर नौकरी क्यों करना चाहती हो, क्या पति की सैलरी कम पड़ रही है, ऐसे ऐसे सवाल होते थे। आज लोग पूछ रहे हैं मैडम आपका जो स्टार्टअप है न बहुत प्रगति कर रहा है, क्या मुझे नौकरी मिलेगी। ये बदलाव आया है।

एक समय था, जब सवाल पूछा जाता था कि बेटी की उम्र बढ़ रही है, शादी कब करोगी। आज पूछा जाता है बेटी पर्सनल और प्रोफेशनल दोनों कामों को संतुलित कितना बढ़िया करती हो, कैसे करती हो?

**आज भारत में युवाओं के लिए जितने नए अवसर बने हैं, ये पहले कभी नहीं बने हैं। आज पूरी vocabulary बदल गई है**

एक समय था घर में कहा जाता था कि घर के मालिक घर पर है कि नहीं है, ऐसा पूछा जाता था। घर के मुखिया को बुलाइये, ऐसा कहते थे। आज किसी के घर जाते हैं तो घर महिला के नाम पर, बिजली का बिल उसके नाम पर आता है। पानी, गैस सब उसके नाम पर, उस परिवार के मुखिया की जगह आज मेरी माताएं-बहनों ने ले ली है। ये बदलाव आया है। ये बदलाव अमृतकाल में 'विकसित भारत' का हमारा जो संकल्प है न, इसकी एक बहुत बड़ी शक्ति के रूप में ये उभरने वाला है और मैं उस शक्ति के दर्शन कर पा रहा हूं।

## कांग्रेस ने किसानों को मूर्ख बनाने की कोशिश की

किसानों के लिए आंसू बहाने की आदत मैंने बहुत देखी है। किसानों के साथ कैसा-कैसा विश्वासघात किया गया है, इसे देश ने देखा है। कांग्रेस के समय कृषि के लिए कुल वार्षिक बजट होता था— 25 हजार करोड़ रुपये। हमारी सरकार का बजट है– सवा लाख करोड़ रुपये।

कांग्रेस ने अपने 10 साल के कार्यकाल में 7 लाख करोड़ रुपये का धान और गेहूं किसानों से खरीदा था। हमने 10 वर्षों में करीब 18 लाख करोड़ का धान, गेहूं खरीदा है। कांग्रेस सरकार ने दलहन और तिलहन की खरीदी नाम

मात्र कभी कहीं की हो तो की हो। हमने सवा लाख करोड़ रुपये से भी अधिक का दलहन और तिलहन खरीद लिया है। हमारे कांग्रेस के साथियों ने 'पीएम किसान सम्मान निधि' का मजाक उड़ाया और जब मैंने मेरी पहली टर्म में यह योजना शुरू की थी तो मुझे याद है कि झूठा नेरेटिव की जो फैशन चल पड़ी है, गांव में जा के कहा जाता था कि देखिये ये मोदी के पैसे मत लेना। ये चुनाव एक बार जीत गया, तो सारे पैसे ब्याज समेत तुमसे वापस मांगेगा, ऐसा झूठ फैलाया गया था। किसानों को इतना मूर्ख बनाने की कोशिश की गई थी।

पीएम किसान सम्मान निधि 2 लाख 80 हजार करोड़ रुपये हमने भेजे। पीएम फसल बीमा योजना 30 हजार रुपये का प्रीमियम और उसके सामने 1.5 लाख करोड़ रुपया मेरे किसान भाई-बहनों को दिया है। कांग्रेस के अपने शासन काल में कभी भी मछुआरे, पशुपालक की तो कभी नामोनिशान नहीं था उनके काम में। पहली बार इस देश में मछुआरों के लिए अलग मंत्रालय बना, पशुपालन के लिए अलग मंत्रालय बना। पहली बार पशुपालक को, मछुआरों को किसान क्रेडिट कार्ड दिया गया, ताकि कम ब्याज से उसको बैंक से पैसा मिल सके, वो अपना कारोबार बढ़ा सके। ये चिंता सिर्फ जानवरों की ही नहीं होती है, ये जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आर्थिक चक्र को चलाने में इन पशुओं की भी बहुत बड़ी भूमिका होती है। हमने फुट एंड माउथ disease, उससे हमारे पशुओं को बचाने के लिए 50 करोड़ से ज्यादा टीके लगाए हैं, पहले कभी सोचा नहीं था किसी ने।

**2014 से पहले Digital Economy का साइज़ न के बराबर था, बहुत ज्यादा उसकी चर्चा भी नहीं थी। आज भारत दुनिया की Digital Economy में अग्रणी है**

## भारत दुनिया की Digital Economy में अग्रणी है

आज भारत में युवाओं के लिए जितने नए अवसर बने हैं, ये पहले कभी नहीं बने हैं। आज पूरी vocabulary बदल गई है, शब्द जो पहले कभी सुनने को नहीं मिलते थे, वो बोलचाल के साथ दुनिया में आ चुके हैं। आज चारों तरफ स्टार्टअप्स की गूंज है, यूनिकॉर्न्स चर्चा में है। आज Digital Creators का

एक बहुत बड़ा वर्ग हमारे सामने है। आज ग्रीन इकोनॉमी की चर्चा हो रही है। ये युवाओं की जुबान पर हैं, ये नए भारत की नई vocabulary हैं। ये नई आर्थिक साम्राज्य के नए परिवेश हैं, नई पहचान है। ये सेक्टर युवाओं के लिए रोजगार के लाखों नए अवसर बना रहे हैं। 2014 से पहले Digital Economy का साइज़ न के बराबर था, बहुत ज्यादा उसकी चर्चा भी नहीं थी। आज भारत दुनिया की Digital Economy में अग्रणी है। लाखों युवा इससे जुड़े हैं और आने वाले समय में ये Digital India Movement जो है, वो देश के नौजवानों के लिए अनेक-अनेक अवसर, अनेक-अनेक रोजगार, अनेक-अनेक प्रोफेशनल्स के लिए अवसर लेकर आने वाला है।

आज मेड इन इंडिया फोन दुनिया में पहुंच रहे हैं। दुनिया में हम नंबर 2 बन गए हैं। और एक तरफ सस्ता मोबाइल प्राप्त हुआ है और दूसरी तरफ सस्ता डेटा, इन दोनों की वजह से एक बहुत बड़ा revolution आया है। देश में और दुनिया में हम जिस कीमत पर आज हमारे नौजवानों को ये प्राप्त करवा रहे हैं, सबसे कम कीमत पर करवा रहे हैं और वो एक कारण बना है। आज मेड इन इंडिया अभियान, रिकॉर्ड मैन्युफैक्चरिंग, रिकॉर्ड एक्सपोर्ट; ये आज देश देख रहा है।

**2014 से पहले के 10 वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में करीब-करीब 12 लाख करोड़ का बजट था, 10 साल में 12 लाख करोड़ रुपये। बीते 10 वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण के अंदर बजट 44 लाख करोड़ रुपये, रोजगार कैसे बढ़ते हैं, इससे समझ आता है**

ये सारे काम हमारे नौजवानों के लिए सबसे ज्यादा रोजगार के अवसर पैदा करने वाले हैं।

## स्वरोजगार की सबसे ज्यादा संभावनाओं वाला टूरिज्म क्षेत्र है

10 वर्ष में टूरिज्म सेक्टर में अभूतपूर्व उछाल आया है। हमारे देश में ये ग्रोथ और टूरिज्म सेक्टर ऐसा है कि इसमें कम से कम पूंजी निवेश में अधिक से अधिक लोगों को रोजगार देने वाला अवसर है। और सामान्य से सामान्य व्यक्ति को भी ये रोजगार देने वाला अवसर है। स्वरोजगार की

सबसे ज्यादा संभावनाओं वाला टूरिज्म क्षेत्र है। 10 वर्ष में एयरपोर्ट 2 गुने बने। भारत में सिर्फ एयरपोर्ट बने ऐसा नहीं है, भारत दुनिया का तीसरा बड़ा डोमेस्टिक एविएशन सेक्टर बना है। हम सबको खुशी होनी चाहिए, भारत की जो एयरलाइंस कंपनियां हैं, उन्होंने 1 हजार नए एयरक्राफ्ट के आर्डर दिए हैं, देश में 1 हजार नए एयरक्राफ्ट और जब इतने सारे हवाई जहाज ऑपरेट होंगे, सारे एयरपोर्ट कितने चमकते होंगे। कितने पायलट्स की जरूरत पड़ेगी, कितने हमें क्रू मेंबर चाहिए, कितने इंजीनियर्स चाहिए, कितने ग्राउंड सर्विस के लोग चाहिए, यानी रोजगार के नए-नए क्षेत्र खुलते जा रहे हैं। एविएशन सेक्टर भारत के लिए एक बहुत बड़ा नया अवसर बनकर आया है।

हमारी कोशिश रही है कि इकोनॉमी को हम thermolise करने की दिशा में मजबूती से कदम उठाएं। युवाओं को नौकरी भी मिले, सोशल सिक्योरिटी भी मिले। इन दोनों को लेकर और अपनी जिन बातों के आधार पर हम निर्णय करते हैं और देश में भी माना जाता है वो एक होता है डेटा ईपीएफओ का। ईपीएफओ में जो रजिस्ट्रेशन होता है 10 साल में करीब 18 करोड़ नए सब्सक्राइबर आए हैं और वो तो सीधा पैसों से जुड़ा खेल होता है, उसमें फर्जी नाम नहीं होते हैं। मुद्रा लोन पाने वालों में 8 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिन्होंने जीवन में पहली बार कारोबार अपना शुरू किया है, बिजनेस शुरू किया है और जब मुद्रा लोन लेता है तो खुद तो रोजगार पाता है, एक या दो और लोगों को भी रोजगार देता है, क्योंकि उसका काम ऐसा होता है। हमने लाखों स्ट्रीट वेंडर्स को सपोर्ट किया है। 10 करोड़ महिलाएं ऐसे ही चीजों से जुड़ी, जैसा मैंने कहा है एक लाख लखपति दीदी, एक करोड़ ये अपने आप में बहुत है और मैंने जैसा कहा, हम 3 करोड़ लखपति दीदी हमारे देश के अंदर देखेंगे।

**10 वर्ष में एयरपोर्ट 2 गुने बने। भारत में सिर्फ एयरपोर्ट बने ऐसा नहीं है, भारत दुनिया का तीसरा बड़ा डोमेस्टिक एविएशन सेक्टर बना है**

कुछ आंकड़े हैं, जो अर्थशास्त्री समझते हैं ऐसा नहीं है, सामान्य मानवी भी समझता है। 2014 से पहले के 10 वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में करीब-करीब 12 लाख करोड़ रुपये का बजट था, 10 साल में 12 लाख करोड़ रुपये।

बीते 10 वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण के अंदर बजट 44 लाख करोड़ रुपये, रोजगार कैसे बढ़ते हैं, इससे समझ आता है।

इस राशि से जितनी भी मात्रा में काम हुआ है, उसके कारण इतने लोगों को रोजी-रोटी मिली है, इसका आप अंदाजा कर सकते हैं। हम भारत को मैन्युफैक्चरिंग का, रिसर्च का, इनोवेशन का हब बने, उस दिशा में देश की युवा शक्ति को प्रोत्साहित कर रहे हैं। व्यवस्थाएं विकसित कर रहे हैं। आर्थिक मदद की योजनाएं बना रहे हैं।

एनर्जी के क्षेत्र में हम हमेशा डिपेंडेंट रहे हैं। एनर्जी के सेक्टर में हमें आत्मनिर्भर होने की दिशा में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। और हमारी कोशिश है ग्रीन एनर्जी की तरफ, हाइड्रोजन को लेकर हम बहुत बड़ी मात्रा में आगे बढ़ रहे हैं, उसमें अभूतपूर्व निवेश। उसी प्रकार से दूसरा क्षेत्र है, जिसमें भारत को लीड लेनी होगी, वो है सेमीकंडक्टर, पिछली सरकार ने जितने प्रयास किये, प्रयास किये, लेकिन सफलता नहीं मिली। अब हम जिस स्थिति में पहुंचे हैं, मैं विश्वास से कहता हूं कि हमारे 3 दशक खराब भले हो गए लेकिन आने वाला समय हमारा है, सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में अभूतपूर्व निवेश मैं देख रहा हूं और भारत दुनिया को एक बहुत बड़ा contribution करेगा। इन सारे कारणों से Quality Job संभावनाएं बहुत बढ़ने वाली हैं और जिसके कारण समाज में जैसे-जैसे हमने एक अलग Skill Ministry बनाई है। उसके पीछे ही तो ये है कि देश के नौजवानों को हुनर मिले और ऐसे अवसर मिलें और हम Industry 4.0 उसके लिए मैन पावर को तैयार करते हुए आगे बढ़ने की दिशा में काम कर रहे हैं।

> **जब देश आगे बढ़ता है तो कुछ हद तक कीमतें भी बढ़ती है, हमको यह भी देखना है कि जो भी आवश्यक वस्तु है उनकी कीमत को कैसे थामे। यह किसने कहा था इंदिरा गांधी जी ने कहा था**

## जब भी कांग्रेस आती है, महंगाई लाती है

यहां महंगाई को लेकर काफी कुछ बातें की गई हैं। मैं जरूर चाहूंगा कि

देश के सामने कुछ सच्चाई आनी चाहिए। इतिहास गवाह है, जब भी कांग्रेस आती है, महंगाई लाती है। मैं कुछ वक्तव्य इस सदन में आज कहना चाहता हूं और किसी की आलोचना करने के लिए नहीं कह रहा हूं, लेकिन हो सकता है हमारी बात जो समझ नहीं पाते हैं, वो अपने लोगों की बात को समझने का प्रयास करेंगे। कहा गया था कभी और किसने कहा था वो मैं बाद में कहूंगा। 'हर चीज की कीमत बढ़ जाने की वजह से मुसीबत फैली है, आम जनता उनमें फंसी है।' ये statement of fact किसका है, ये कहा था हमारे पंडित नेहरू जी ने, लाल किले से कहा था उस समय। 'हर चीज की कीमत बढ़ जाने की वजह से मुसीबत फैली है आम जनता उनमें फंसी है', ये उस समय की बात है। उन्होंने माना था लाल किले से, चारों तरफ महंगाई बढ़ी है। अब नेहरू जी के इस वक्तव्य के 10 साल के बाद एक और वक्तव्य का quote आपके सामने रखता हूं। मैं quote बता रहा हूं, आप लोग आजकल भी कुछ दिक्कतों में हैं, परेशानियों में हैं, महंगाई की वजह से, कुछ तो लाचारी है, पूरी तौर से काबू की बात नहीं हो पा रही है हमारे इस समय में, हालांकि वो काबू में आएगी। 10 साल के बाद भी महंगाई के यही गीत कहे गए थे और ये किसने कहे थे, फिर से ये नेहरू जी ने कहा था उन्हीं के कार्यकाल में। तब देश का पीएम रहते उन्हें, 12 साल हो चुके थे, लेकिन हर बार महंगाई कंट्रोल में नहीं आ रही है, महंगाई के कारण आपको मुसीबत हो रही है, इसी के गीत गाते रहे थे।

> **हमारी सरकार ने महंगाई को लगातार नियंत्रण में रखा है। दो-दो युद्ध के बावजूद और 100 साल में आए सबसे बड़े संकट के बावजूद महंगाई नियंत्रण में है और हम कर पाए हैं**

अब मैं एक और भाषण का हिस्सा पढ़ रहा हूं। जब देश आगे बढ़ता है तो कुछ हद तक कीमतें भी बढ़ती है, हमको ये भी देखना है कि जो भी आवश्यक वस्तु है उनकी कीमत को कैसे थामे। ये किसने कहा था, इंदिरा गांधी जी ने कहा था। 1974 में जब सारे देश में उन्होंने सारे दरवाजे पर ताले लगा दिए थे, लोगों को जेल में बंद कर दिया था। 30 पर्सेंट महंगाई थी।

अपने भाषण में यहां तक कहा गया था, क्या कहा था— आप चौक जाएंगे।

उन्होंने कहा था अगर जमीन न हो यानी कुछ पैदावार के लिए जमीन न हो तो अपने गमले और कनस्तर में सब्जी उगा लें। ये ऐसी सलाहें उच्च पद पर बैठे हुए लोग दिया करते थे। जब देश में महंगाई को लेकर 2 गाने सुपरहिट हुए थे, हमारे देश में। घर-घर गाए जाते थे। एक महंगाई मार गई और दूसरा महंगाई डायन खाय जात है और ये दोनों गाने कांग्रेस के शासनकाल में आए।

यूपीए के शासनकाल में महंगाई डबल डिजिट में थी, इसको नकार नहीं सकते हैं और यूपीए सरकार का तर्क क्या था— असंवेदनशीलता। यह कहा गया था कि महंगी आइसक्रीम खा सकते हो तो महंगाई का रोना क्यों रो रहे हो, यह कहा गया था। जब भी कांग्रेस आई है, उसने महंगाई को ही मजबूत किया है।

हमारी सरकार ने महंगाई को लगातार नियंत्रण में रखा है। दो-दो युद्ध के बावजूद और 100 साल में आए सबसे बड़े संकट के बावजूद महंगाई नियंत्रण में है, और हम कर पाए हैं।

> **कांग्रेस के एक प्रधानमंत्री ने कहा था कि अगर एक रुपया भेजते हैं, 15 पैसे पहुंचते हैं, अगर उस हिसाब से मैं देखूं तो हमने जो 30 लाख भेजे हैं, अगर उनका जमाना होता तो कितना रुपया कहां चला जाता, इसका हिसाब लगाइए। 15 पर्सेंट मुश्किल से लोगों के पास पहुंचता, बाकी सब कहां चला जाता**

यहां पर बहुत गुस्सा व्यक्त किया गया, जितना हो सका उतने उठोर शब्द में गुस्सा व्यक्त किया गया। उनका दर्द मैं समझता हूं। उनकी मुसीबत और ये गुस्सा मैं समझता हूं क्योंकि तीर निशाने पर लगा है। भ्रष्टाचार पर एजेंसियां एक्शन ले रही हैं। उसको लेकर भी इतना गुस्सा, किन-किन शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है।

## 10 साल पहले सदन का पूरा समय घोटालों की चर्चा पर जाता था

10 साल पहले हमारे सदन में पार्लियामेंट में क्या चर्चा होती थी। सदन का पूरा समय घोटालों की चर्चा पर जाता था। भ्रष्टाचार की चर्चा पर जाता था। लगातार एक्शन की डिमांड होती थी। सदन ये ही मांग करता रहता था,

एक्शन लो, एक्शन लो, एक्शन लो। वो कालखंड देश ने देखा है। चारों तरफ भ्रष्टाचार की खबरें, रोजमर्रा थीं। और आज जब भ्रष्टाचारियों पर एक्शन लिया जा रहा है, तो लोग उनके समर्थन में हंगामा करते हैं।

इनके समय में एजेंसियों का सिर्फ और सिर्फ राजनीतिक उपयोग के लिए उपयोग किया जाता था। बाकी उनको कोई काम करने नहीं दिया जाता था। अब आप देखिए उनके कालखंड में क्या हुआ— PMLA Act के तहत हमने पहले के मुकाबले दो गुने से अधिक केस दर्ज किए हैं। कांग्रेस के समय में ईडी ने 5 हजार करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की थी। हमारे कार्यकाल में ईडी ने 1 लाख करोड़ रुपये की संपत्ति, ये देश का लूटा हुआ माल देना ही पड़ेगा और जिनका इतना सारा माल पकड़ा जाता हो, नोटों के ढेर पकड़े जाते हो और अधीर बाबू तो बंगाल से आते हैं, देखें हैं नोटों के ढेर उन्होंने तो। किस-किस के घर में से पकड़े जाते हैं, किस-किस राज्यों में पकड़े जाते थे। देश ये नोटों के ढेर देख-देखकर चौक गया है, लेकिन अब जनता को आप मूर्ख नहीं बना सकते, जनता देख रही है कि किस प्रकार से यूपीए सरकार में जो भ्रष्ट्राचार की बातें होती थीं, उसका टोटल 10-15 लाख करोड़ रुपये का रहा है, चर्चा होती थी।

**हमने ये फर्जी नामों को हटाने से करीब-करीब 3 लाख करोड़ रुपये फर्जी हाथों में जाने से बचाये हैं, गलत हाथों में जाने से बचाये हैं। देश के taxpayer का पाई-पाई बचाना और सही काम में लगाना इसके लिए हमने जीवन खपा रखे हैं**

हमने लाखों-करोड़ रुपये के घोटाले तो अटकाए, लेकिन उन सारे पैसों को गरीबों के काम लगा दिया, गरीबों के कल्याण के लिए। अब बिचौलियों के लिए गरीबों को लूटना बहुत मुश्किल हो गया है। Direct Benefit Transfer, जनधन अकाउंट, आधार, मोबाइल उसकी ताकत हमने पहचानी है। 30 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रकम हमने लोगों के खाते में सीधी पहुंचाई है और अगर कांग्रेस के एक प्रधानमंत्री ने कहा था कि अगर एक रुपया भेजते हैं, 15 पैसे पहुंचते हैं, अगर उस हिसाब से मैं देखूं तो हमने जो 30 लाख भेजे हैं, अगर उनका जमाना होता तो कितना रुपया कहां चला जाता इसका हिसाब लगाइए। 15 पर्सेंट मुश्किल से लोगों के पास पहुंचता,

बाकी सब कहां चला जाता।

हमने 10 करोड़ फर्जी नाम हटाए हैं, अभी लोग पूछते हैं ना कि पहले इतना आंकड़ा था क्यों कम हुआ, आपने ऐसी व्यवस्था बनाई थी, जिस बेटी का जन्म नहीं हुआ, उसको आपके यहां से विधवा पेंशन जाती थी और ऐसे सरकारी योजनाओं को मारने के जो रास्ते थे ना 10 करोड़ फर्जी नाम बंद किए, ये जो परेशानी है ना, इन चीजों की है, क्योंकि रोजमर्रा की आय इनकी बंद हो गई है।

हमने ये फर्जी नामों को हटाने से करीब-करीब 3 लाख करोड़ रुपये फर्जी हाथों में जाने से बचाये हैं, गलत हाथों में जाने से बचाये हैं। देश के taxpayer का पाई-पाई बचाना और सही काम में लगाना इसके लिए हमने जीवन खपा रखे हैं।

सभी राजनीतिक दलों को भी सोचने की जरूरत है और समाज में भी जो लोग बैठे हैं, उनको देखने की जरूरत है। आज देश का दुर्भाग्य है, पहले तो क्लासरूम में भी कोई अगर चोरी करता था, किसी की कॉपी करता था, तो वो भी 10 दिन तक अपना मुंह किसी को दिखाता नहीं था। आज जो भ्रष्टाचार के आरोप, जिन पर सिद्ध हो चुके हैं, जो जेलों में समय निकालकर पेरोल पर आए हैं, आज washing machine से भी बड़ा कंधे पर लेकर महिमामंडन कर रहे हैं ऐसे चोरों का सार्वजनिक जीवन में। कहां ले जाना चाहते हो देश को तुम, जो सजा हो चुकी है, मैं ये तो समझता हूं कि आरोप जो हैं उनके लिए तो आप सोच सकते हैं लेकिन जो गुनाह सिद्ध हो चुका है, जो सजा काट चुके हैं, जो सजा काट रहे हैं, ऐसे लोगों का महिमामंडन करते हो आप। कौन सा कल्चर और देश की भावी पीढ़ी को क्या प्रेरणा देना चाहते हो आप, कौन से रास्ते और ऐसी कौन-सी आपकी मजबूरी है और ऐसे लोगों का महिमामंडन किया जा रहा है, उनको महान बताया जा रहा है। जहां संविधान का राज है, जहां लोकतंत्र है। ये जो महिमामंडन का काम चल रहा है उनका

**देश सुरक्षा और शांति का एहसास कर रहा है। पिछले दस वर्ष की तुलना में सुरक्षा के क्षेत्र में देश आज वाकई सशक्त हुआ है। आतंकवाद, नक्सलवाद एक छोटे दायरे में अब सिमटा हुआ है**

अपने ही खात्मे की चिठ्ठी पर सिग्नेचर कर रहे हैं ये लोग।

जांच करना ये एजेंसियों का काम है। एजेंसियां स्वतंत्र होती हैं और संविधान ने उनको स्वतंत्र रखा हुआ है और जज करने का काम न्यायाधीश का है और वो अपना काम कर रहे हैं। मैं इस पवित्र सदन में फिर से दोहराना चाहूंगा, जिसको जितना जुल्म मुझ पर करना है कर लें, मेरी भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई चलती रहेगी। जिन्होंने देश को लूटा है, उनको लौटाना पड़ेगा। ये मैं देश को इस सदन की पवित्र जगह से वादा करता हूं। जिसको जो आरोप लगाना है, लगा लें, लेकिन देश को लुटने नहीं दिया जाएगा और जो लूटा है वो लौटाना पड़ेगा।

## देश सुरक्षा और शांति का एहसास कर रहा है

देश सुरक्षा और शांति का एहसास कर रहा है। पिछले दस वर्ष की तुलना में सुरक्षा के क्षेत्र में देश आज वाकई सशक्त हुआ है। आतंकवाद, नक्सलवाद एक छोटे दायरे में अब सिमटा हुआ है, लेकिन भारत की जो टेररिज्म के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति है, आज पूरे विश्व को भी भारत की इस नीति की तरफ चलने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। भारत की सेनाएं सीमाओं से ले करके समंदर तक अपने सामर्थ्य को ले करके आज उनकी धाक है। हमें हमारी सेना के पराक्रम पर गर्व होना चाहिए। हम कितना ही उनका मनोबल तोड़ने की कोशिश करें, मुझे मेरी सेना पर भरोसा है, मैंने उनके सामर्थ्य को देखा है। कुछ राजनेता सेना के लिए हल्के-फुल्के शब्द बोल दें, इससे मेरे देश की सेना demoralised होगी, इन सपनों में कोई रहते हैं तो निकल जाएं। देश के मूड को वो खत्म नहीं कर सकते और किसी के एजेंट बन करके इस प्रकार की भाषा अगर कहीं से भी उठती है, देश कभी स्वीकार नहीं कर सकता

> **अगर नेहरू जी का नाम लेते हैं तो उनको बुरा लगता है, लेकिन कश्मीर को जो समस्याएं झेलनी पड़ीं, उसके मूल में उनकी यह सोच थी और उसी का परिणाम इस देश को भुगतना पड़ा है। जम्मू-कश्मीर के लोगों को, देश के लोगों को नेहरू जी की गलतियों की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है**

है और जो खुलेआम देश में अलग देश बनाने की वकालत करते हैं, जोड़ने की बातें छोड़ो, तोड़ने की कोशिश की जा रही है, आपके अंदर क्या पड़ा हुआ है, क्या इतने टुकड़े करके अभी भी आपके मन को संतोष नहीं हुआ है? देश के इतने टुकड़े कर चुके हो आप, और टुकड़े करना चाहते हों, कब तक करते रहोगे?

इसी सदन में अगर कश्मीर की बात होती थी, तो हमेशा चिंता का स्वर निकलता था, छींटाकशी होती थी, आरोप-प्रत्यारोप होते थे। आज जम्मू-कश्मीर में अभूतपूर्व विकास की चर्चा हो रही है और गर्व के साथ हो रही है। पर्यटन लगातार बढ़ रहा है। जी 20 समिट होती है वहां, पूरा विश्व आज उसकी सराहना करता है। आर्टिकल 370 को ले करके कैसा हौआ बनाकर रखा था। कश्मीर के लोगों ने जिस प्रकार से उसको गले लगाया है, कश्मीरी जनता ने जिस प्रकार से गले लगाया है, और आखिरकार ये समस्या किसकी देन थी, किसने देश के माथे पर मारा था, किसने भारत के संविधान के अंदर इस प्रकार की दरार करके रखी हुई थी?

अगर नेहरू जी का नाम लेते हैं तो उनको बुरा लगता है, लेकिन कश्मीर को जो समस्याएं झेलनी पड़ीं, उसके मूल में उनकी ये सोच थी और उसी का परिणाम इस देश को भुगतना पड़ा है। जम्मू-कश्मीर के लोगों को, देश के लोगों को नेहरू जी की गलतियों की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है।

वो भले गलतियां करके गए, लेकिन हम मुसीबतें झेल करके भी गलतियां सुधारने के लिए हमारी कोशिश जारी रहेगी, हम रुकने वाले नहीं हैं। हम देश के लिए काम करने के लिए निकले हुए लोग हैं। हमारे लिए नेशन फर्स्ट है।

## देश से बढ़कर कुछ नहीं होता है

मैं सभी राजनीतिक दलों के नेताओं से आग्रह करूंगा, सभी माननीय सदस्यों से आग्रह करूंगा, भारत के जीवन में बहुत बड़ा अवसर आया है। वैश्विक परिवेश में भारत के लिए बड़ा अवसर आया है, एक नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का अवसर आया है। राजनीति अपनी जगह पर होती है, आरोप-प्रत्यारोप अपनी जगह पर होता है, लेकिन देश से बढ़कर कुछ नहीं होता है। और इसलिए आइए, मैं निमंत्रण देता हूं आपको, कंधे से कंधा मिला

करके हम देश के निर्माण के लिए आगे बढ़ें। राजनीति में किसी भी जगह पर रहते हुए भी राष्ट्र निर्माण में आगे बढ़ने में कोई रुकावट नहीं आती है। आप इस राह को मत छोड़िए। मैं आपका साथ मांग रहा हूं, मां भारती के कल्याण के लिए साथ मांग रहा हूं। मैं विश्व के अंदर जो अवसर आया है, उस अवसर को भुनाने के लिए आपका साथ मांग रहा हूं। मैं आपका सहयोग चाहता हूं, 140 करोड़ देशवासियों की जिंदगी को और समृद्ध बनाने के लिए और सुखी बनाने के लिए, लेकिन अगर आप साथ नहीं दे सकते हैं और अगर आपका हाथ ईंटें फेंकने पर ही तुला हुआ है, तो आप लिख करके रखिए, आपकी हर ईंट को मैं विकसित भारत की नींव मजबूत करने के लिए उठाऊंगा। आपके हर पत्थर को मैं विकसित भारत के जो सपनों को हम ले करके चले हैं, उसकी नींव मजबूत करने के लिए मैं लगा दूंगा और देश को उस समृद्धि की ओर हम लेकर जाएंगे। जितने पत्थर उछालने हैं, उछाल लीजिए, आपका हर पत्थर समृद्ध एवं विकसित भारत के सपने को साकार करने के काम में लूंगा, ये भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।

साथियों की तकलीफें मैं जानता हूं। लेकिन वो जो कुछ भी बोलते हैं, मैं दुःखी नहीं होता हूं और दुखी होना भी नहीं चाहिए, क्योंकि मैं जानता हूं ये नामदार हैं, हम कामदार हैं और हम कामदारों को तो नामदारों से सुनना ही पड़ता है ये। तो नामदार कुछ भी कहते रहें, कुछ भी कहने का उनको तो जन्मजात अधिकार मिले हुए हैं और हम कामदारों को सुनना होता है, हम सुनते भी रहेंगे और देश को सहजते भी रहेंगे, देश को आगे बढ़ाते रहेंगे।

आपने मुझे इस पवित्र सदन में आदरणीय राष्ट्रपति जी के उद्बोधन का समर्थन करने के लिए बोलने का अवसर दिया। मैं आदरणीय राष्ट्रपति जी के इस उद्बोधन को समर्थन देते हुए धन्यवाद प्रस्ताव पर आभार प्रकट करते हुए मेरी वाणी को विराम देता हूं।

❑❑❑

# राज्यसभा

## 'हर संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाना, यह हमारी कार्यशैली का हिस्सा है'

**प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 07 फरवरी, 2024 को राज्यसभा में संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का उत्तर दिया। श्री मोदी ने कहा, "राष्ट्रपति जी के संबोधन में भारत के बढ़ते आत्मविश्वास, भविष्य और यहां के लोगों में अपार संभावनाएं जैसे विषयों का जिक्र किया गया है।" उन्होंने कहा, "भारत 'फ्रैजाइल फाइव' और पॉलिसी पैरालिसिस के दिनों से निकलकर शीर्ष 5 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गया है। पिछले 10 साल सरकार के ऐतिहासिक फैसलों के लिए जाने जाएंगे और मोदी 3.0 विकसित भारत की नींव को मजबूत करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा।" श्री मोदी ने कहा, "सबका साथ, सबका विकास" कोई नारा नहीं है। यह मोदी की गारंटी है।" राज्यसभा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के उत्तर का संपूर्ण पाठ इस प्रकार है:**

आदरणीय सभापति जी, मैं यहां आदरणीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण की चर्चा में भागीदार बनने के लिए उपस्थित हुआ हूं। मैं आदरणीय राष्ट्रपति जी के भाषण को मेरी तरफ से आदरपूर्वक धन्यवाद भी देता हूं, अभिनंदन भी करता हूं।

यह 75वां गणतंत्र दिवस, यह अपने-आप में एक महत्वपूर्ण milestone है और उस समय संविधान की यात्रा के इस महत्वपूर्ण पड़ाव का राष्ट्रपति जी का भाषण उसका एक ऐतिहासिक महत्व भी रहता है। उन्होंने अपने भाषण में भारत के आत्मविश्वास की बात कही है, भारत के उज्ज्वल भविष्य के प्रति विश्वास को प्रकट किया है और भारत के कोटि-कोटि जनों का जो सामर्थ्य

है, उस सामर्थ्य को बहुत ही कम शब्दों में, लेकिन बहुत ही शानदार तरीके से देश के सामने सदन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। मैं राष्ट्रपति जी के इस प्रेरक उद्बोधन के लिए और राष्ट्र को दिशा-निर्देश के लिए और एक प्रकार से विकसित भारत के संकल्प को सामर्थ्य देने के लिए हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं।

चर्चा के दरम्यान अनेक माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे और चर्चा को समृद्ध करने का अपने-अपने तरीके से प्रयास भी किया। इस चर्चा को समृद्ध करने के प्रयास करने वाले सभी आदरणीय साथियों का भी मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूं, अभिनंदन करता हूं। कुछ साथियों के लिए आलोचना करना, कड़वी बातें करना, ये उनकी मजबूरी थी, उनके प्रति भी मैं संवेदनाएं प्रकट करता हूं।

मैं उस दिन तो कह नहीं पाया, लेकिन मैं खड़गे जी का विशेष आभार प्रकट करता हूं। बहुत ध्यान से सुन रहा था खड़गे जी को मैं और ऐसा आनंद आया— ऐसा आनंद आया... ऐसा बहुत कम मिलता है। लोकसभा में तो कभी-कभी मिल जाता है, लेकिन आजकल वो दूसरी ड्यूटी पर हैं, तो मनोरंजन कम मिलता है। लेकिन लोकसभा में जो मनोरंजन की कमी हमें खल रही है उस दिन आपने पूरी कर दी। मुझे प्रसन्नता इस बात की थी कि माननीय खड़गे जी काफी लम्बा और बड़े इत्मीनान, मजे से, शांति से बोल रहे थे, समय भी काफी दिया था। तो मैं सोच रहा था कि आजादी मिली कैसे, इतना सारा बोलने की आजादी मिली कैसे? ये बात मैं सोच तो रहा था, लेकिन बाद में मेरे ध्यान में आया दो स्पेशल कमांडर जो रहते हैं ना, उस दिन नहीं थे, वो आजकल नहीं रहते। इसलिए बहुत भरपूर फायदा स्वतंत्रता का आदरणीय खड़गे जी ने उठाया है और मुझे लगता है, उस दिन खड़गे जी ने सिनेमा का एक गाना सुना होगा, 'ऐसा मौका फिर कहां मिलेगा।' अब खड़गे जी भी एम्पायर नहीं हैं, कमांडोज नहीं हैं तो

**मैं राष्ट्रपति जी के इस प्रेरक उद्बोधन के लिए और राष्ट्र को दिशा-निर्देश के लिए और एक प्रकार से विकसित भारत के संकल्प को सामर्थ्य देने के लिए हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं**

चौक्के-छक्के मारने में मजा आ रहा था उनको। लेकिन एक बात खुशी की रही। उन्होंने जो 400 सीट एनडीए के लिए आशीर्वाद दिया था और खड़गे जी के आशीर्वाद मेरे सिर-आंखों पर। अब आपको आशीर्वाद वापिस लेना है तो ले सकते हैं, क्योंकि अपने लोग तो आ गए हैं।

## मेरी आवाज को आप दबा नहीं सकते हैं

मुझे पिछले वर्ष का वो प्रसंग बराबर याद है, उस सदन में हम बैठते थे और देश के प्रधानमंत्री की आवाज को गला घोंटने का भरपूर प्रयास किया गया था। हम बड़े धैर्य के साथ, बड़ी नम्रता के साथ आपके एक-एक शब्द को सुनते रहे और आज भी आप न सुनने की तैयारी के साथ आए हैं, लेकिन मेरी आवाज को आप दबा नहीं सकते हैं। देश की जनता ने इस आवाज को ताकत दी हुई है। देश की जनता के आशीर्वाद से आवाज निकल रही है। मैं भी इस बार पूरी तैयारी के साथ आया हूं। मैंने सोचा था कि उस वक्त कि शायद आप जैसे व्यक्ति इस सदन में आए हैं तो मर्यादाओं का पालन करेंगे, लेकिन डेढ़-पौने दो घंटे तक क्या जुल्म किया था आप लोगों ने मुझ पर और उसके बाद भी मैंने एक भी शब्दों की मर्यादाएं तोड़ी नहीं।

> **कांग्रेस ने सत्ता के लालच में सरेआम लोकतंत्र का गला घोंट दिया था, जिस कांग्रेस ने दर्जनों बार लोकतांत्रिक तरीके से चुन करके आई सरकारों को रातोंरात भंग कर दिया था**

मैंने भी एक प्रार्थना की है। आप प्रार्थना तो कर सकते हो, मैं तो करता रहता हूं। पश्चिम बंगाल से आपको जो चैलेंज आया है कि कांग्रेस 40 पार नहीं कर पाएगी। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप 40 बचा पाएं।

हमको बहुत सुनाया गया है और हमने सुना है। लोकतंत्र में आपका कहने का अधिकार है और हमारी सुनने की जिम्मेदारी है। आज जो भी बातें हुई हैं, उसको मुझे देश के सामने रखनी चाहिए और इसलिए मैं प्रयास करूंगा।

ये जब सुनता हूं, उधर भी सुना, इधर भी सुना, मेरा विश्वास पक्का हो गया है कि पार्टी सोच से भी outdated हो गई है। जब सोच outdated हो

गई है तो उन्होंने अपना कामकाज भी outsource कर दिया है। देखते ही देखते इतना बड़ा दल, इतने दशकों तक देश पर राज करने वाला दल, ऐसा पतन, ऐसी गिरावट, हमें खुशी नहीं हो रही है, हमारी आपके प्रति संवेदनाएं हैं, लेकिन डॉक्टर क्या करेगा जी, पेशेंट खुद... आगे क्या बोलूं।

ये बात सही है कि आज बहुत बड़ी-बड़ी बातें होती हैं, सुनने की ताकत भी खो चुके हैं, लेकिन मैं तो देश के सामने बात रखने के लिए जरूर कहूंगा। जिस कांग्रेस ने सत्ता के लालच में सरेआम लोकतंत्र का गला घोंट दिया था, जिस कांग्रेस ने दर्जनों बार लोकतांत्रिक तरीके से चुन करके आई सरकारों को रातोंरात भंग कर दिया था, बर्खास्त कर दिया था, जिस कांग्रेस ने देश के संविधान, लोकतंत्र की मर्यादाओं को जेल की सलाखों के पीछे बंद कर दिया था...जिस कांग्रेस ने अखबारों पर ताले लगाने तक की कोशिश की थी, अब आज जो कांग्रेस देश को तोड़ने के नेरेटिव गढ़ने का नया शौक पैदा हुआ है। इतना तोड़ा कम नहीं है, अब उत्तर-दक्षिण को तोड़ने के लिए बयान दिए जा रहे हैं? और यह कांग्रेस हमें लोकतंत्र और federalism पर प्रवचन दे रही है?

**जिस कांग्रेस के अपने नेता की कोई गारंटी नहीं है, अपनी नीति की कोई गारंटी नहीं है, वो मोदी की गारंटी पर सवाल उठा रहे हैं**

## कांग्रेस ने देश को बांटने में कोई कसर नहीं छोड़ी

जिस कांग्रेस ने जात-पांत और भाषा के नाम पर देश को बांटने में कोई कसर नहीं छोड़ी, जिस कांग्रेस ने आतंकवाद और अलगाववाद को अपने हित में पनपने दिया, जिस कांग्रेस ने नॉर्थ-ईस्ट को हिंसा, अलगाव और पिछड़ेपन में धकेल दिया, जिस कांग्रेस के राज में नक्सलवाद को देश के लिए बहुत बड़ी चुनौती बनाकर छोड़ दिया, जिस कांग्रेस ने देश की बहुत बड़ी जमीन दुश्मनों के हवाले कर दी, जिस कांग्रेस ने देश की सेनाओं का आधुनिकीकरण होने से रोक दिया, वो आज हमें राष्ट्रीय सुरक्षा और आंतरिक सुरक्षा के लिए भाषण दे रहे हैं? जो कांग्रेस आजादी के बाद से ही confuse

रही, उनको उद्योग जरूरी हैं कि खेती जरूरी है, उसी confusion में गुजारा किया। जो कांग्रेस तय नहीं कर पाई कि nationalization करना है कि privatisation करना है, उलझती रही। जो कांग्रेस 10 वर्ष में 12 नंबर से 11 नंबर पर आर्थिक व्यवस्था ले आ पाई, 10 साल में 12 से 11 नंबर और आपको 12 से 11 आने में बहुत मेहनत नहीं पड़ती है, जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं तो मेहनत और बढ़ती है, हम 10 साल में 5 नंबर पर ले आए और ये कांग्रेस हमें यहां आर्थिक नीतियों पर लंबे-लंबे भाषण सुना रही है?

जिस कांग्रेस ने ओबीसी को पूरी तरह से आरक्षण नहीं दिया, जिसने सामान्य वर्ग के गरीबों को कभी आरक्षण नहीं दिया, जिसने बाबा साहेब के बजाय, बाबा साहेब को भारत रत्न देने योग्य नहीं माना, अपने ही परिवार को भारत रत्न देते रहे। जिस कांग्रेस ने देश की गली-सड़कों, चौक-चौराहे पर अपने ही परिवार के नाम के पार्क जड़ दिए हैं, वो हमें उपदेश दे रहे हैं? वो हमें सामाजिक न्याय का पाठ पढ़ा रहे हैं?

जिस कांग्रेस के अपने नेता की कोई गारंटी नहीं है, अपनी नीति की कोई गारंटी नहीं है, वो मोदी की गारंटी पर सवाल उठा रहे हैं।

जिस कांग्रेस के अपने नेता की कोई गारंटी नहीं है, अपनी नीति की कोई गारंटी नहीं है, वो मोदी की गारंटी पर सवाल उठा रहे हैं

यहां एक शिकायत थी और उनको लगता है कि हम ऐसा क्यों कहते हैं, हम ऐसा क्यों देख रहे हैं। देश और दुनिया उनके 10 साल के कार्यकाल को ऐसे क्यों देखती थी, देश क्यों नाराज हो गया, इतना गुस्सा देश को क्यों आया, हमारे कहने से सब नहीं हुआ है, खुद के कर्मों के फल और अब तो सामने रहते हैं, वो कोई दूसरे जन्म में नहीं होते हैं, इसी जन्म में हैं।

हम किसी को बुरा नहीं कहते हैं, हमें क्यों बुरा कहना चाहिए, जब उन्हीं को लोगों ने बहुत कुछ कहा हो तो मुझे क्या कहने की जरूरत है। मैं एक तरह का वक्तव्य सदन के सामने रखना चाहता हूं। मैं पहला quote पढ़ रहा हूं – "सदस्यगण जानते हैं कि हमारी growth धीमी हो रही है और fiscal deficit बढ़ गया है, महंगाई दर बीते 2 वर्षों से लगातार बढ़ रही

है। Current account deficit हमारी उम्मीदों से कहीं अधिक हो चुका है।" ये quote मैंने पढ़ा है। ये किसी भाजपा के नेता का quote नहीं है, न ही ये quote मेरा है।

यूपीए सरकार के 10 साल पर तत्कालीन प्रधानमंत्री आदरणीय पीएम के रूप में रहे श्रीमान मनमोहन सिंह जी ने कहा था और खुद के कार्यकाल में कहा। ये हालत थी, उन्होंने वर्णन किया था।

अब मैं दूसरा quote पढ़ता हूं – देश में व्यापक गुस्सा है। पब्लिक ऑफिस के misuse को लेकर भारी गुस्सा है, institutions का misuse कैसे होता था," ये उस समय भी मैंने नहीं कहा, ये उस समय के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी कह रहे थे। उस समय भ्रष्टाचार को लेकर पूरा देश सड़कों पर था, गली-गली में आंदोलन चल रहे थे। अब मैं तीसरा quote पढ़ूंगा— एक संशोधन की कुछ पंक्तियां हैं, इसको भी आप सुनिए– "Tax Collection में भ्रष्टाचार होता है, इसके लिए GST लाना चाहिए, राशन की योजना में leakage होती है, जिससे देश का गरीब से गरीब सबसे अधिक पीड़ित है, इसको रोकने के लिए उपाय खोजने होंगे। सरकारी ठेके जैसे दिए जा रहे हैं उस पर शक होता है।" ये भी तत्कालीन प्रधानमंत्री आदरणीय मनमोहन सिंह जी ने कहा था और उसके पहले एक प्रधानमंत्री ने कहा था कि दिल्ली से एक रुपया जाता है, 15 पैसे पहुंचता है। बीमारी का पता था, सुधार करने की तैयारी नहीं थी और आज बातें तो बड़ी-बड़ी की जा रही हैं। कांग्रेस के 10 साल का इतिहास देखिए, Fragile Five Economy में दुनिया में कहा जाता था, ये मैं नहीं दुनिया कहती है Fragile Five. Policy paralysis ये तो उनकी पहचान बन गई थी और हमारे 10 वर्ष टॉप Five Economy वाले। हमारे बड़े और निर्णायक फैसलों के लिए 10 साल याद किए जाएंगे।

**कांग्रेस के 10 साल का इतिहास देखिए, Fragile Five Economy में दुनिया में कहा जाता था, ये मैं नहीं दुनिया कहती है Fragile Five. Policy paralysis ये तो उनकी पहचान बन गई थी**

हम उस कठिन दौर से बहुत मेहनत करके सोच-समझकर देश को संकटों से बाहर लाए हैं। यह देश ऐसे ही आशीर्वाद नहीं दे रहा है।

## अंग्रेजों से कौन inspired था?

यहां सदन में अंग्रेजों को याद किया गया। अब राजा, महाराजाओं का तो अंग्रेजों के साथ गहरा नाता रहा था उस समय, तो अब मैं जरा पूछना चाहता हूं कि अंग्रेजों से कौन inspired था? मैं ये तो नहीं पूछूंगा कि कांग्रेस पार्टी को जन्म किसने दिया था, ये तो मैं नहीं पूछूंगा। आजादी के बाद भी देश में गुलामी की मानसिकता को किसने बढ़ावा दिया। अगर आप अंग्रेजों से प्रभावित नहीं थे, तो अंग्रेजों की बनाई दंडसंहिता, Penal Code आपने क्यों नहीं बदली।

अगर आप अंग्रेजों से प्रभावित नहीं थे तो अंग्रेजों के जमाने के सैकड़ों कानून क्यों चलते रहे। आप अगर अंग्रेजों से प्रभावित नहीं थे तो लाल बत्ती कल्चर, इतने दशकों बाद भी क्यों चलता रहा? अगर आप अंग्रेजों से प्रभावित नहीं थे, तो भारत का बजट शाम को 5 बजे इसलिए आता था, क्योंकि British Parliament का सुबह शुरू होने का समय होता था। ये Britain की पार्लियामेंट के अनुकूल शाम 5 बजे बजट की परंपरा क्यों चलाई रखी थी आपने? कौन अंग्रेजों से inspired था। अगर आप अंग्रेजों से प्रेरित नहीं थे तो हमारी सेनाओं के चिन्हों पर आज भी गुलामी के प्रतीक अब तक क्यों बने हुए थे? हम एक के बाद एक हटा रहे हैं। अगर आप अंग्रेजों से प्रेरित नहीं थे तो राजपथ को कर्तव्य पथ बनने के लिए मोदी का इंतजार क्यों करना पड़ा।

**अगर आप अंग्रेजों से प्रभावित नहीं थे तो अंग्रेजों के जमाने के सैकड़ों कानून क्यों चलते रहें। आप अगर अंग्रेजों से प्रभावित नहीं थे तो लाल बत्ती कल्चर, ये लाल बत्ती कल्चर इतने दशकों बाद भी क्यों चलता रहा?**

अगर आप अंग्रेजों से प्रभावित नहीं थे, तो अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों पर आज भी अंग्रेजी सत्ता के निशान क्यों लटके पड़े थे?

अगर आप अंग्रेजों से प्रभावित नहीं थे, तो इस देश के सेना के जवान

देश के लिए मर-मिटते रहे, लेकिन देश के जवानों के सम्मान में एक War Memorial तक आप बना नहीं पाए थे, क्यों नहीं बनाया? अगर आप अंग्रेजों से Inspired नहीं थे, प्रभावित नहीं थे तो भारतीय भाषाओं को हीन भावना से क्यों देखा? स्थानीय भाषा में पढ़ाई के प्रति आप लोगों की बेरुखी क्यों थी?

अगर आप अंग्रेजों से प्रेरित नहीं थे तो भारत को Mother of Democracy बताने में आपको कौन रोकता था? मैं सैकड़ों उदाहरण दे सकता हूं कि आप किस प्रभाव में काम करते थे और देश को सुनते हुए ये सारी बातें याद आने वाली हैं।

मैं एक और उदाहरण देना चाहता हूं। कांग्रेस ने Narrative फैलाएं, और उस narrative का परिणाम क्या हुआ कि भारत की संस्कृति और संस्कार को मानने वाले लोगों को बड़े हीन भाव से देखा जाने लगा, दकियानूसी माना जाने लगा और इस प्रकार से हमारे अतीत के प्रति अन्याय करने की नौबत आई है। अपनी मान्यताओं को गाली देते हैं, अपनी अच्छी परंपराओं को गाली देते हैं तो आप progressive हैं, इस प्रकार के narrative गढ़े जाने लगे देश में और इसका नेतृत्व कहां होता था ये दुनिया भली-भांति जानती है। दूसरे देश से आयात करना, उस पर गर्व करना और भारत की कोई चीज है तो दूसरे दर्जे की है, ये status बना दिया गया था। ये status symbol बाहर से आया, made in foreign status बना दिया था। ये लोग आज भी वोकल फॉर लोकल बोलने से बच रहे हैं, मेरे देश के गरीबों के कल्याण का काम होता है। आज आत्मनिर्भर भारत की बात उनके मुंह से नहीं निकलती है। आज Make in India कोई बोलता है तो उनके पेट में चूहे दौड़ने लग जाते हैं।

**अगर हम 21वीं सदी में हैं, हम विकसित भारत के सपनों को इसी सदी में 2047 तक सिद्ध करना चाहते हैं तो 20वीं सदी की सोच नहीं चल सकती है**

देश ये सब देख चुका है और अब समझ भी चुका है और उसी का परिणाम आप भुगत भी रहे हैं।

राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में विस्तार से सिर्फ चार सबसे बड़ी जातियों के विषय में हम सबको संबोधित किया था। युवा, नारी, गरीब और हमारे अन्नदाता। हम जानते हैं कि इनकी समस्याएं ज्यादातर एक समान हैं, उनके सपने भी एक समान हैं और उसके समाधान अगर करने हैं तो थोड़ा 19-20 का फर्क पड़ेगा, लेकिन इन चारों वर्गों के समाधान के रास्ते भी एक ही हैं। इसलिए उन्होंने बहुत ही उपयुक्त रूप से राष्ट्र का मार्गदर्शन किया है कि इन चार स्तंभों को मजबूत करिए, देश विकसित भारत की तरफ तेज गति से आगे बढ़ेगा।

## 20वीं सदी की सोच नहीं चल सकती है

अगर हम 21वीं सदी में हैं, हम विकसित भारत के सपनों को इसी सदी में 2047 तक सिद्ध करना चाहते हैं तो 20वीं सदी की सोच नहीं चल सकती है। 20वीं सदी का स्वार्थीय एजेंडा, मैं और मेरा वाला जो खेल है न वो 21वीं सदी में देश को समृद्ध विकसित भारत नहीं बना सकता है। इन दिनों काफी बातें हो रही हैं, कांग्रेस को जाति की फिर से एक बार क्यों जरूरत पड़ गई है। मैं तो नहीं जानता हूं, लेकिन अगर उनको जरूरत पड़ी है तो पहले जरा अपने गिरेबान में झांके, उनको पता चलेगा क्या किया है। दलित, पिछड़े और आदिवासी का कांग्रेस जन्मजात सबसे बड़ी विरोधी रही है, और मैं तो कभी-कभी सोचता हूं अगर बाबासाहेब ना होते, तो शायद ये SC/ST को आरक्षण मिलता कि नहीं मिलता, ये भी मेरे मन में सवाल उठता है।

> देश के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू जी द्वारा उस समय के देश के मुख्यमंत्रियों को लिखी गई चिट्ठी है, on record है, मैं अनुवाद पढ़ता हूं – मैं किसी भी आरक्षण को पसंद नहीं करता और खासकर नौकरी में आरक्षण तो कतई नहीं

और मैं ये कह रहा हूं इसके पीछे मेरे पास प्रमाण है। इनकी सोच आज से नहीं है, उस समय से ऐसी है मेरे पास प्रमाण है। मैं प्रमाण के सिवाय, मैं यहां कहने के लिए नहीं आया हूं और जब बातें वहां से उठी हैं तो फिर

तैयारी रखनी चाहिए उनको और मेरा परिचय तो हो चुका है, 10 साल हो गए। एक बार और मैं आदरपूर्वक नेहरू जी को इन दिनों ज्यादा याद करता हूं, क्योंकि हमारे साथियों की अपेक्षा रहती है कि जरा उनको कभी-कभी बोलो, कुछ तो बोलना चाहिए। अब देखिए, एक बार नेहरू जी ने एक चिठ्ठी लिखी थी। यह चिठ्ठी मुख्यमंत्रियों को लिखी थी, मैं उसका अनुवाद पढ़ रहा हूं, उन्होंने लिखा था, यह देश के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू जी द्वारा उस समय के देश के मुख्यमंत्रियों को लिखी गई चिठ्ठी है, on record है, मैं अनुवाद पढ़ता हूं – "मैं किसी भी आरक्षण को पसंद नहीं करता और खासकर नौकरी में आरक्षण तो कतई नहीं, मैं ऐसे किसी भी कदम के खिलाफ हूं जो अकुशलता को बढ़ावा दे, जो दोयम दर्जे की तरफ ले जाए।" यह पंडित नेहरू की मुख्यमंत्रियों को लिखी हुई चिठ्ठी है, और तब जाकर के मैं कहता हूं, ये जन्मजात इसके विरोधी हैं। नेहरू जी कहते थे, अगर SC, ST, OBC को नौकरियों में आरक्षण मिला तो सरकारी काम का स्तर गिर जाएगा। आज जो आंकड़े गिनाते हैं ना, इतने यहां हैं, इतने यहां हैं, उसका मूल तो यहां है, क्योंकि उस समय तो उन्होंने रोक दिया था, recruitment ही मत करो। अगर उस समय सरकार में भर्ती हुई होती और वो प्रमोशन करते-करते आगे बढ़ते, तो आज यहां पर पहुंचते।

**SC, ST, OBC की बड़ी भागीदारी से कांग्रेस और साथियों को हमेशा परेशानी रही है। बाबासाहेब की राजनीति को, बाबासाहेब के विचारों को खत्म करने के लिए कोई कसर उन्होंने छोड़ी नहीं है**

ये quote मैं पढ़ रहा हूं, आप verify कर सकते हैं। मैं पंडित नेहरू का quote पढ़ रहा हूं।

आप तो जानते हैं नेहरू जी ने जो कहा वो कांग्रेस के लिए हमेशा से पत्थर की लकीर होता है। नेहरू जी ने कहा मतलब पत्थर की लकीर उनके लिए। दिखावे के लिए आप कुछ भी कहें, लेकिन आपकी सोच ऐसे कई उदाहरणों से सिद्ध होती है। मैं अनगिनत उदाहरण देख सकता हूं, लेकिन मैं एक उदाहरण जरूर देना चाहता हूं और वो उदाहरण मैं जम्मू-कश्मीर

का देना चाहता हूं।

## कांग्रेस ने जम्मू–कश्मीर के SC, ST, OBC को उनके अधिकारों से वंचित रखा

कांग्रेस ने जम्मू-कश्मीर के SC, ST, OBC को सात दशकों तक उनके अधिकारों से वंचित रखा। हमने आर्टिकल 370 को निरस्त किया, तब जाकर के इतने दशकों के बाद SC, ST, OBC को वो अधिकार मिले, जो देश के लोगों को बरसों से मिले हुए थे, उसको रोक के रखा था। जम्मू-कश्मीर में Forest Rights Act उनको प्राप्त नहीं था। जम्मू-कश्मीर में Prevention of Atrocities Act नहीं था, ये हमने 370 हटाकर ये अधिकार उनको दिए। हमारे SC समुदाय में भी सबसे पीछे कोई रहा तो हमारा वाल्मीकि समाज रहा, लेकिन हमारे वाल्मीकि परिवारों को जो सात-सात दशक के बाद भी जम्मू-कश्मीर में रहे, लोगों की सेवा करते रहे लेकिन Domicile का अधिकार नहीं दिया गया। मैं आज देश को भी अवगत कराना चाहता हूं कि स्थानीय निकायों में Local Self Governments में OBC के आरक्षण का विधेयक भी कल 6 फरवरी को लोकसभा में भी पारित हुआ है।

**राष्ट्रपति जी का अपमान करने की घटनाएं कम नहीं है। पहली बार इस देश में हुआ है। उनके जिम्मेदार लोगों के मुंह से ऐसी-ऐसी बातें निकली हैं, शर्म से माथा झुक जाए**

SC, ST, OBC की बड़ी भागीदारी से कांग्रेस और साथियों को हमेशा परेशानी रही है। बाबासाहेब की राजनीति को, बाबासाहेब के विचारों को खत्म करने के लिए कोई कसर उन्होंने छोड़ी नहीं है। वक्तव्य available है, चुनाव में क्या-क्या बोला गया वो भी available है। इनको तो भारत रत्न भी देने की तैयारी नहीं थी। जब भाजपा के समर्थन से सरकार बनी तब बाबासाहेब को भारत रत्न मिला। इतना ही नहीं, सीताराम केसरी अति पिछड़ी जाति से कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष उठाकर के फुटपाथ पर फेंक दिया गया, OBC। वो वीडियो available है, वो देश ने देखा। सीताराम केसरी के साथ

क्या हुआ।

इनके एक मार्गदर्शक अमेरिका में बैठे हैं, जो पिछले चुनाव में हुआ तो हुआ के लिए Famous हो गए थे और कांग्रेस इस परिवार के काफी करीबी हैं। उन्होंने अभी-अभी संविधान निर्माता बाबासाहेब अंबेडकर के योगदान को छोटा करने का भरपूर प्रयास किया।

## हमने हमेशा दलितों और आदिवासियों को प्राथमिकता दी है

देश में पहली बार एनडीए ने एक आदिवासी बेटी को राष्ट्रपति बनाने के लिए प्रस्ताव दिया, उनको उम्मीदवार बनाया। आपका हमसे वैचारिक विरोध हो, वो एक बात है। अगर हमसे वैचारिक विरोध होता आपने सामने Candidate खड़ा किया होता, मैं समझ सकता था। लेकिन वैचारिक विरोध नहीं था क्यों, क्योंकि हमारे यहां से गया हुआ व्यक्ति को आपने उम्मीदवार बनाया। इसलिए वैचारिक विरोध नहीं था, आपका विरोध एक आदिवासी बेटी के लिए था। इसलिए आपने और जब संगमा जी चुनाव लड़ रहे थे, वो भी एक आदिवासी थे नॉर्थ ईस्ट के, उनके साथ भी यही किया गया था और आज तक, राष्ट्रपति जी का अपमान करने की घटनाएं कम नहीं है। पहली बार इस देश में हुआ है। उनके जिम्मेदार लोगों के मुंह से ऐसी-ऐसी बातें निकली हैं, शर्म से माथा झुक जाए। राष्ट्रपति के लिए ऐसी भाषा बोली गई है, मन में जो कसक पड़ी है ना, वो कहीं न कहीं इस प्रकार से निकलती रहती है। एनडीए के अंदर हमें 10 साल काम करने का मौका मिला। हमने पहले दलित को और अब आदिवासी को, हमने हमेशा हमारी प्राथमिकता क्या है इसका परिचय दिया है।

> **हमने जितना काम किया है ना, ये SC, ST, OBC, आदिवासी— इसी समाज के लिए है। कच्ची बस्तियों में रहने वाले लोगों को पक्का घर मिला है, तो मेरे इस समाज के बंधुओं को मिला है**

जब मैं हमारी सरकार के performance की बात करता हूं। एनडीए की जो गरीब कल्याण की नीतियां हैं, उसकी बातें करता हूं। थोड़ा सा अगर

उस समाज को निकट से जानते हो, आखिर किस समाज के लाभार्थी हैं, कौन लोग हैं? ये झुग्गी-झोपड़ी में किसको रहने के लिए जिंदगी गुजारनी पड़ रही है? ये किस समाज के लोग हैं? मुसीबतों से गुजरना पड़ता है, व्यवस्थाओं से वंचित रहना पड़ा है, कौन समाज है? हमने जितना काम किया है ना, ये SC, ST, OBC, आदिवासी इसी समाज के लिए है। कच्ची बस्तियों में रहने वाले लोगों को पक्का घर मिला है, तो मेरे इस समाज के बंधुओं को मिला है। स्वच्छता के अभाव में हर बार बीमारी से जूझना पड़ता था, उनको 'स्वच्छ भारत अभियान' का लाभ देने का काम हमारी योजनाओं के तहत मिला है, ताकि उसको अच्छी जिंदगी जीने का अवसर मिल सके। इसी परिवारों के हमारी माताएं-बहनें धुएं से खाना पका-पका करके अपने स्वास्थ्य के संकट को झेल रही थीं, हमने उनको उज्ज्वला गैस दिया, वो इन्हीं परिवारों में से हैं। मुफ्त राशन हो, मुफ्त इलाज हो, इसके लाभार्थी यही मेरे परिवार हैं। जो समाज के इस वर्ग के मेरे परिवारजन हैं, जिनके लिए हमारी सारी योजनाएं काम कर रही हैं।

**पहले 1 सेंट्रल ट्राइबल यूनिवर्सिटी थी, आज 2 सेंट्रल ट्राइबल यूनिवर्सिटी हैं। ये भी सच्चाई है कि लंबे अर्से तक दलित, पिछड़े, आदिवासी बेटे-बेटियां कॉलेजों का दरवाजा तक नहीं देख पाते थे**

यहां पर कुछ ऐसा नेरेटिव रखा गया, कम से कम तथ्यों को इस प्रकार से नकारना किसका भला होगा? आप ऐसा करके अपनी क्रेडिबिलिटी भी खो रहे हैं। अपनी प्रतिष्ठा भी खो रहे हैं।

यहां शिक्षा के भ्रामक आंकड़े भी रखे गए। गुमराह करने का कैसा प्रयास होता है। पिछले 10 वर्ष में SC, ST students के लिए जो scholarship दी जाती है, 10 साल में उसकी वृद्धि हुई है। इन 10 वर्षों में स्कूलों में, हायर एजुकेशन में, नामांकन की संख्या भी बहुत बढ़ी है और dropout बहुत तेजी से कम हुआ है।

10 साल पहले 120 एकलव्य मॉडल स्कूल थे, आज 400 एकलव्य मॉडल स्कूल हैं। आप इन चीजों को क्यों नकारते हैं, क्यों ऐसा करते हैं?

मुझे समझ नहीं आता इस बात का।

पहले 1 सेंट्रल ट्राइबल यूनिवर्सिटी थी, आज 2 सेंट्रल ट्राइबल यूनिवर्सिटी हैं। ये भी सच्चाई है कि लंबे अर्से तक दलित, पिछड़े, आदिवासी बेटे-बेटियां कॉलेजों का दरवाजा तक नहीं देख पाते थे। मैं गुजरात में जब सीएम बना तो मेरे लिए चौंकाने वाला analysis मेरे सामने आया। गुजरात में उमरगांव से अम्बाजी पूरा बेल्ट आदिवासी बहुल क्षेत्र है। हमारे दिग्विजय सिंह जी के दामाद भी उसी इलाके में हैं। उस पूरे इलाके में साइंस स्ट्रीम का एक भी स्कूल नहीं था, मैं जब वहां गया अब उस इलाके में मेरे आदिवासी बच्चों के लिए साइंस स्ट्रीम का स्कूल नहीं होगा तो इंजीनियरिंग, डॉक्टरी का तो सवाल ही कहां उठता है। ऐसी minimum चीजें और यहां पर क्या भाषण दे रहे हैं जी।

**उच्च शिक्षा में ST विद्यार्थियों का नामांकन 65% बढ़ा है। हायर एजुकेशन में OBC समाज के विद्यार्थियों के नामांकन में 45% बढ़ोतरी हुई है**

और मैं बताना चाहता हूं सदन को गर्व होगा, आप उस सदन में बैठे हैं, वहां एक ऐसी सरकार आपके साथ बात कर रही है कि ऐसी सरकार नेतृत्व कर रही है, जहां कितना बड़ा परिवर्तन आया। आप उस समाज का विश्वास बढ़ाइए, उनका हौसला बुलंद कीजिए। वो देश की मुख्यधारा में तेजी से आगे बढ़ें, उसके लिए हम प्रयास करें, सामूहिक प्रयास करें। आप देखिए, आदिवासी और हमारे SC, ST के विद्यार्थियों का नामांकन, मैं कुछ आंकड़े रखना चाहता हूं। उच्च शिक्षा में SC विद्यार्थियों का नामांकन 44% बढ़ा है। उच्च शिक्षा में ST विद्यार्थियों का नामांकन 65% बढ़ा है। हायर एजुकेशन में OBC समाज के विद्यार्थियों के नामांकन में 45% बढ़ोतरी हुई है। जब मेरे गरीब, दलित, पिछड़े, आदिवासी, वंचित उन परिवार के बच्चे हायर एजुकेशन में जाएंगे, डॉक्टर बनेंगे, इंजीनियर बनेंगे, उस समाज के अंदर एक नया वातावरण पैदा होगा और उस दिशा में हमारी कोशिश यही है कि मूलभूत समस्याओं का समाधान करने के लिए थोड़ा समय लगे, लेकिन मजबूती से काम करे और इसलिए हमने एजुकेशन को इस प्रकार से बल

देके काम किया है। कृपा करके जानकारियों का अभाव है तो कहिए हम जानकारियां दे देंगे आपको, लेकिन ऐसे नेरेटिव मत बनाइए ताकि आपकी प्रतिष्ठा भी कम हो, आपके शब्द की भी ताकत खत्म हो जाए, आप पर दया आ जाती है कभी-कभी।

## सबका साथ, सबका विकास

'सबका साथ, सबका विकास'— ये नारा नहीं है, ये मोदी की गारंटी है। और जब इतने सारे काम करते हैं तो किसी ने कविता लिखकर के भेजी थी, कविता तो बड़ी लंबी है क्योंकि उसमें एक वाक्य है—

मोदी की गारंटी का दौर है,
नए भारत की भोर
Out of warranty चल रही दुकानें,
खोजें अपनी ठोर

किस प्रकार देश में निराशा फैलाने प्रयास किया जा रहा है, मैं यह तो समझता हूं जो लोग इतनी निराशा की गर्त मे डूब चुके हैं, वैसे निराशा फैलाने का उनका सामर्थ्य भी बचा नहीं है। आशा का संचार तो कर ही नहीं सकते। जो खुद ही निराशा में डूबे हैं उनसे आशा लेकिन देश में हर जगह जहां बैठो वहां निराशा, निराशा, निराशा फैलाने का जो खेल चल रहा है और सच्चाई को नकार कर हो रहा है। वो न खुद का भला कर पाएंगे, न देश का भला कर पाएंगे।

**मैं तो आजाद भारत में पैदा हुआ हूं। मेरे विचार भी आजाद हैं और मेरे सपने भी आजाद हैं। जो गुलामी की मानसिकता को जीने वाले हैं उसके पास और कुछ चीजें नहीं हैं। वही पुराने कागज लेकर के घूमते रहते हैं**

हर बार एक ही गाना गाया जाता है। समाज के कुछ वर्गों को भड़काने के लिए बिना हकीकतों को ऐसे वाक्य बोल दिए जाते हैं। मैं जरा देश के सामने कुछ हकीकत बोलना चाहता हूं और मुझे विश्वास है मीडिया ऐसे विषयों पर जरा डिबेट कर ले, ताकि पता चले।

यहां पर सरकारी कंपनियों को लेकर हमारे ऊपर भांति-भांति के आरोप लगे। क्या-क्या आरोप लगाए जा रहे हैं। सिर, पैर, माथा कुछ नहीं है, बस लगाते चलो। अब देखिए, देश को याद है मारुति के शेयर के साथ क्या खेल चल रहा था। उस जमाने में हेडलाइन्स बना करती थी। मारुति शेयर का क्या चल रहा था। मैं उसकी गहराई में नहीं जाना चाहता हूं वरना उनको वहां तक पानी पहुंचेगा कि शायद यहां पर करंट लग जाएगा। इसलिए मैं वहां तक जाना नहीं चाहता। देश को जानना जरूरी है।

मैं तो आजाद भारत में पैदा हुआ हूं। मेरे विचार भी आजाद हैं और मेरे सपने भी आजाद हैं। जो गुलामी की मानसिकता को जीने वाले हैं उसके पास और कुछ चीजें नहीं हैं। वही पुराने कागज लेकर के घूमते रहते हैं।

कांग्रेस ने कहा कि हमने PSU बेच दिए, PSU डुबो दिए, भांति-भांति के बातें यहां पर होती है और वरिष्ठ लोगों के मुंह से सुन रहा था। याद कीजिए BSNL, MTNL को बर्बाद करने वाले कौन थे? वो कौन सा का कालखंड था, जब BSNL, MTNL बर्बाद हो चुके। जरा याद कीजिए HAL उसकी दुर्दशा क्या करके रखी थी, बर्बादी! और जाकर के गेट पर भाषण देकर के 2019 का चुनाव लड़ने का एजेंडा तय होता था HAL के नाम पर। जिन्होंने HAL को तबाह कर दिया था। वो HAL के गेट पर जाकर के भाषण झाड़ रहे थे।

**आज जिस बीएसएनएल को आपने तबाह करके छोड़ा था ना वो बीएसएनएल आज मेड इन इंडिया 4 जी, 5 जी उस तरफ आगे बढ़ रहा है और दुनिया का ध्यान आकर्षित कर रहा है**

एयर इंडिया को किसने तबाह कर दिया, किसने बर्बाद कर दिया, ऐसी हालत कौन लाया था। कांग्रेस पार्टी और यूपीए— ये दस साल की उनकी बर्बादी से मुंह नहीं मोड़ सकते। देश भली-भांति जानता है, और अब मैं हमारे कार्यकाल की जरा सफलता की बात बताना चाहता हूं।

आज जिस बीएसएनएल को आपने तबाह करके छोड़ा था ना, वो बीएसएनएल आज मेड इन इंडिया 4 जी, 5 जी उस तरफ आगे बढ़ रहा है और दुनिया का ध्यान आकर्षित कर रहा है।

HAL के लिए इतनी भ्रम फैलाए, आज record manufacturing

HAL दे रहा है। Record Revenue Generate कर रहा है HAL. जिसको लेकर इतने हो हल्ले चलाए गए और कर्नाटक में एशिया की सबसे बड़ी हेलीकॉप्टर बनाने वाली कंपनी HAL बन गई है। कहां छोड़ा था, कहां जाकर हमने पहुंचाया।

एक कमांडो जो यहां नहीं है, LIC को लेकर भी पता नहीं कैसे-कैसे बड़ी विद्वत्तापूर्ण बयान देते थे। LIC का ऐसा हो गया, LIC का वैसा हो गया, LIC का यूं हो गया। जितनी गलत बातें LIC के लिए बोलनी चाहिए बोली और तरीका यही है किसी को बर्बाद करने के लिए अफवाह फैलाओ, झूठ फैलाओ, भ्रम फैलाओ और टेक्निक वही है गांव में किसी का बड़ा बंगला हो, लेने का मन करता हो, लेकिन हाथ न लगता हो तो फिर हवा फैला देते हैं कि भुतिया बंगला है यहां जो जाता है, ऐसी हवा फैला देते हैं कोई लेता नहीं है फिर जाकर लपक लेते हैं। LIC, LIC क्या चलाया?

**10 साल पहले यानी 2014, 2004 से 2014 के बीच की बात करता हूं। PSU का net profit करीब-करीब सवा लाख करोड़ था। इस दस वर्ष में PSU का net profit ढाई लाख करोड़ है। हमारे दस वर्ष में PSU की net worth 9.5 lakh crore से बढ़कर 17 lakh crore हो गई है**

मैं सीना तानकर सुनाना चाहता हूं, आंखें ऊंची करके सुनाना चाहता हूं। आज एलआईसी के शेयर रिकॉर्ड स्तर पर ट्रेड कर रहे हैं। क्यों?

अब प्रचार किया जा रहा है, PSU बंद हो गए, PSU बंद हो गए। अब उनको तो याद भी नहीं होगा। बस किसी ने पकड़ा दिया बोलो-बोलो। 2014 में देश में 234 PSU थे। 2014 उनके यूपीए के दस साल के कालखंड में। अब 2014 में जब उन्होंने छोड़ा 234, आज 254 हैं। अब भाई कोई कौन सा arithmetic वो जानते हैं, बेच दिए, अब बेचने के बाद 254 हो गया, क्या-क्या कर रहे हो आप लोग?

## इन्वेस्टर्स का भरोसा PSUs की तरफ बढ़ रहा है

आज अधिकतर PSU record return दे रहे हैं, और इन्वेस्टर्स का

भरोसा PSUs की तरफ बढ़ रहा है। जो छोटा सा भी शेयर बाजार जानते हैं उनको समझ आता है। नहीं समझता है तो किसी को पूछो। BSE PSU Index में बीते एक वर्ष के दौरान लगभग दो गुनी उछाल हुई है।

10 साल पहले यानी 2014, 2004 से 2014 के बीच की बात करता हूं। PSU का net profit करीब-करीब सवा लाख करोड़ रुपये था। और इस दस वर्ष में PSU का net profit ढाई लाख करोड़ रुपये है। हमारे दस वर्ष में PSU की net worth 9.5 lakh crore से बढ़कर 17 lakh crore हो गई है।

इनका हाथ जहां भी लगता है ना, उसका डूबना तय हो जाता है, और उसकी यही दशा करके उन्होंने छोड़ी थी। हम मेहनत करके इतनी बहार लाए, इतनी प्रतिष्ठा बढ़ी है, आपको खुशी होनी चाहिए, भ्रम मत फैलाइये बाजार में हवा ऐसी न फैलाइये, कि देश के सामान्य निवेशक के मन उलझन में आ जाए। ऐसा काम आप नहीं कर सकते।

**हम राज्यों के विकास से ही राष्ट्र का विकास कर पाएंगे। इस पर कोई विवाद नहीं हो सकता है**

इन लोगों की मर्यादा इतनी है, अब इन्होंने अपने युवराज को एक स्टार्टअप बनाकर दिया है। अभी वो नॉन स्टार्टर है, न तो वो लिफ्ट हो रहा है, न वो लॉन्च हो रहा है।

मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे लंबे समय तक एक राज्य के मुख्यमंत्री के नाते देश की और जनता की सेवा करने का अवसर मिला। इसलिए मैं regional aspirations को भली-भांति समझता हूं। क्योंकि मैं उस process से निकला हूं। हम इसका महत्व समझते हैं। हमें कोई किताबों में नहीं पढ़ना पड़ता है, हम अनुभव करके आए हैं और ये भी सच्चाई है सब। दस साल यूपीए की पूरी शक्ति गुजरात को क्या कुछ न करने में लगी हुई थी। आप कल्पना नहीं कर सकते हैं। लेकिन मैं आंसू नहीं बहाता, रोने की मेरी आदत नहीं है, लेकिन तब भी, उतने संकटों के बावजूद भी उतने जुल्म के बाद भी, हर प्रकार की मुसीबतों को झेलते हुए भी, मेरी तो मुसीबत ऐसी थी कि यहां किसी मिनिस्टर से मुझे अपॉइंटमेंट नहीं मिलती थी। वो कहते थे कि भई आप

जानते हो, मेरी तो दोस्ती है मैं फोन पर बात कर लूंगा, लेकिन कहीं फोटो-वोटो निकल गई, यह डर रहता था। यहां मंत्रियों को डर रहता था। अब खैर उनकी मुसीबतें मैं समझ सकता हूं। मेरे यहां एक बार बड़ी प्राकृतिक आपदा आई। मैंने उस समय प्रधानमंत्री जी को बड़ा रिक्वेस्ट किया कि आप आइये, एक बार जरा देख लीजिए। उनका कार्यक्रम बना। फिर साहब एक एडवाइजरी कमेटी बनी थी ना, शायद वहां से हुक्म आया, तो कोई हेलीकॉप्टर से हवाई निरीक्षण करे वो तो मैं समझता सकता हूं, साहब वो कार्यक्रम बदलकर साउथ में किस राज्य में गए थे मुझे याद नहीं रहा आज। और बोले हम हवाई जहाज से ऊपर से देख लेंगे, हम गुजरात में नहीं आएंगे। मैं सूरत पहुंचा हुआ था, वो आने वाले थे। मैं जानता हूं आखिर में क्या हुआ होगा। तो आप कल्पना कर सकते हैं साहब, प्राकृतिक आपदा में भी मैंने ऐसी मुसीबतों को झेला है, लेकिन उसके बावजूद भी उस समय भी मेरा मंत्र था, आज भी मेरा मंत्र है कि देश के विकास के लिए राज्य का विकास। भारत के विकास के लिए गुजरात का विकास। हम सबको इसी रास्ते पर चलना चाहिए। हम राज्यों के विकास से ही राष्ट्र का विकास कर पाएंगे। इस पर कोई विवाद नहीं हो सकता है। मैं आपको विश्वास देता हूं सभापति जी, राज्य अगर एक कदम चलता है तो दो कदम चलने की ताकत देने के लिए मैं तैयार हूं। Cooperative federalism क्या होता है? और मैंने तो हमेशा कहा Competitive Cooperative federalism, आज देश को जरूरत है Competitive Cooperative federalism, हमारे राज्यों के बीच में तंदुरुस्त स्पर्धा हो ताकि हम तेजी से देश में आगे बढ़ें। एक सकारात्मक सोच के साथ हमको चलने की जरूरत है। और मैं राज्य में था तब भी इसी विचारों को लेकर काम करता था। इसलिए चुपचाप सहता भी था।

**हमारे राज्यों के बीच में तंदुरुस्त स्पर्धा हो, ताकि हम तेजी से देश में आगे बढ़ें। एक सकारात्मक सोच के साथ हमको चलने की जरूरत है**

कोविड एक उदाहरण है। इतना बड़ा संकट आया दुनिया का। ऐसे संकट के समय राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ 20 बैठकें की उस कालखंड में।

एक-एक बात का विचार-विमर्श करके साथ ले करके चले और सभी राज्यों का सहयोग, एक टीम बन करके केंद्र और राज्य ने काम किया... दुनिया जिस मुसीबत को झेल नहीं पाई... हम सबने मिल करके... किसी एक को क्रेडिट मैं कभी नहीं दूंगा... सबने मिल करके इस देश को बचाने के लिए जो हो सकता है, किया। राज्यों को भी उसका क्रेडिट लेने का पूरा अधिकार है, इस सोच में हमने काम किया है।

## हमने जी–20 का पूरा यश राज्यों को लेने का मौका दिया

जी-20 का आयोजन हम दिल्ली में कर सकते थे। हम दिल्ली में इन बड़े-बड़े नेताओं के बीच रह करके सब कुछ, क्या नहीं कर पाए, पहले ये हुआ ही है। हमने ऐसा नहीं किया। हमने जी-20 का पूरा यश राज्यों को लेने का मौका दिया। दिल्ली में एक मीटिंग की...राज्यों में 200 मीटिंग की ताकि एक-एक राज्य को एक्सपोजर मिले दुनिया में। ये गलती से नहीं हुआ, योजनाबद्ध तरीके से हुआ है। मेरे लिए किसकी सरकार है, इसके आधार पर मैं देश नहीं चलाता हूं, हम सब मिल करके देश आगे बढ़ाना चाहते हैं, इस भूमिका से काम किया है।

**आज मुझे aspirational district को आगे बढ़ाने के लिए 80 परसेंट ताकत राज्यों से मिल रही है**

हमारे देश में विदेश के मेहमान आते थे, तो मेरे आने के बाद आ रहे हैं ऐसी थोड़ी न बात है? पहले भी आते थे, आज विदेशी मेहमान आते हैं तो मेरा आग्रह रहता है कि आपको एक दिन किसी राज्य में जाना चाहिए। मैं उनको ले करके जाता हूं राज्यों में, ताकि उनको पता चले कि मेरा देश अब दिल्ली नहीं है। मेरा देश चेन्नई में भी है। मेरा देश बेंगलुरु में भी है। मेरा देश हैदराबाद में भी है, मेरा देश पुरी में भी है, भुवनेश्वर में भी है, मेरा देश कलकत्ता में भी है, मेरा देश गुवाहाटी में भी है। पूरी दुनिया को मेरे देश के हर कोने का एक्सपोजर मिले, इसकी हम कोशिश कर रहे हैं। वहां की सरकार का सहयोग-असहयोग, इसके तराजू पर नहीं तौलते। एक ईमानदारी से इस देश के भविष्य के लिए, पूरा विश्व मेरे भारत

को जाने, इसके लिए हम प्रयास करते हैं और मैं अभी भी 26 जनवरी को इतना बड़ा काम रहता है, सबको मालूम है, उसके बाद भी मैं 25 तारीख को फ्रांस के राष्ट्रपति को राजस्थान की गलियों में घुमा रहा था, दुनिया को पता चले कि मेरा राजस्थान ऐसा है।

हमने एक बहुत बड़ा कार्यक्रम लिया है, जिसकी पूरे विश्व में मॉडल के रूप में चर्चा हो रही है- aspirational district... aspirational district की जो सफलता है ना उसमें 80 परसेंट भूमिका मेरे राज्यों के सहयोग की है। राज्यों ने जो सहयोग दिया है, उन्होंने aspirational district की मेरी भावना को समझा है। आज मुझे aspirational district को आगे बढ़ाने के लिए 80 परसेंट ताकत राज्यों से मिल रही है। डिस्ट्रिक्ट लेवल के अफसरों से मिल रही है और जो राज्य, वो राज्य के औसत में भी आखिरी पायदान पर खड़े थे, वो आज नेशनल एवरेज के साथ कम्पीटीशन करने लगे हैं, ये डिस्ट्रिक कभी पिछड़े डिस्ट्रिक माने जाते थे। ये सब कुछ सहयोग से होता है। इसलिए हमारे कार्यक्रमों की रचना ही सबको साथ ले करके चलने की है और मिल करके देश के भविष्य को बनाने की है। आज देश का हर कोना, हर परिवार विकास के फल प्राप्त करे, ये हम सबका दायित्व है और हम उसी दिशा में जाना चाहते हैं। हम हर राज्य को उसका पूरा हक भी देना चाहते हैं, लेकिन मैं आज एक अहम मुद्दे पर मेरी पीड़ा व्यक्त करना चाहता हूं।

**अगर देश का एक कोना, अगर शरीर का एक अंग काम नहीं करता है तो पूरा शरीर अपंग माना जाता है। अगर देश का भी कोई कोना, देश का कोई क्षेत्र विकास से वंचित रह जाएगा तो देश विकसित नहीं हो सकता है**

## राष्ट्र हमारे लिए सिर्फ जमीन का टुकड़ा नहीं है

एक राष्ट्र हमारे लिए सिर्फ जमीन का टुकड़ा नहीं है। हम सबके लिए एक इकाई ऐसी है, जो प्रेरणा देने वाली इकाई है। जैसे शरीर होता है, शरीर में जैसे अंगाअंगी भाव होता है, अगर पैर में कांटा लगे तो पैर ये नहीं कहता है,

हाथ कभी नहीं सोचता है कि मुझे क्या, पैर को कांटा लगा है...पैर, पैर का काम करेगा, पलभर में हाथ पैर के पास पहुंच जाता है, कांटा निकालता है। कांटा पैर को लगता है, आंख ये नहीं कहती कि आंसू मैं क्यों बहाऊं, आंसू आंख से निकलते हैं। हिन्दुस्तान के किसी भी कोने में दर्द हो तो पीड़ा सबको होनी चाहिए। अगर देश का एक कोना, अगर शरीर का एक अंग अगर काम नहीं करता है तो पूरा शरीर अपंग माना जाता है। शरीर जिस प्रकार से, अगर देश का भी कोई कोना, देश का कोई क्षेत्र विकास से वंचित रह जाएगा तो देश विकसित नहीं हो सकता है। इसलिए हमें भारत को एक अंगाअंगी भाव से देखना चाहिए, उसको टुकड़ों में नहीं देखना चाहिए। जिस प्रकार से इन दिनों भाषा बोली जा रही है, देश को तोड़ने के लिए राजनीतिक स्वार्थ के लिए नए narrative गढ़े जा रहे हैं। एक पूरी सरकार मैदान में उतर करके भाषा गढ़ रही है। इससे बड़ा देश का दुर्भाग्य क्या हो सकता है, आप मुझे बताइए।

**देश को तोड़ने के लिए नए-नए narrative खोजना बंद कर दीजिए। देश को आगे बढ़ना है, देश को एक साथ लेकर चलने का प्रयास कीजिए**

झारखंड का कोई आदिवासी बच्चा अगर Olympic के खेल के अंदर जाकर के medal लेकर आएगा, तो क्या हम ये सोचते हैं कि ये तो झारखंड का बच्चा है, पूरा देश कहता है, हमारे देश का बच्चा है। जब एक झारखंड के बच्चे में प्रतिभा देखते है और देश हजारों, लाखों रुपया खर्च करके उसको अच्छे कोचिंग के लिए दुनिया के किसी देश में भेजता है, तो हम ये सोचेंगे कि ये खर्चा झारखंड के लिए हो रहा है, क्या इस देश के लिए नहीं हो रहा है। हम क्या करने लगे हैं, क्या भाषा बोलने लगे हैं। इससे देश का गौरव, हमारे यहां वैक्सीन, देश के करोड़ों लोगों को वैक्सीन लगी, हम ये कहेंगे वैक्सीन तो उस कोने में बनी थी इसलिए हक उनका है, देश को नहीं मिल सकती, क्या ऐसा सोच सकते हैं क्या? वैक्सीन उस शहर में बनी थी, इसलिए देश के और भागों को इसका लाभ नहीं मिलेगा, ये सोचेंगे क्या? क्या सोच बन गई है और एक राष्ट्रीय दल के अंदर से ऐसे विचार आए ये बहुत दुःख की बात है।

मैं पूछना चाहता हूं—

क्या अगर हिमालय कहना शुरू कर दे, हिमालय कल बोलना शुरू कर दे, ये नदियां मेरे यहां से बहती हैं, मैं तुम्हें पानी नहीं देने दूंगा, पानी का अधिकार मेरा, देश का क्या होगा, देश कहां जाकर रुकेगा। अगर जिन राज्यों में कोयला है, वो कह दे कोयला नहीं मिलेगा, ये हमारी संपत्ति है, जाओ तुम अंधेरे में गुजारा करो, देश कैसे चलेगा।

कोविड के समय, हमारे यहां Oxygen की संभावनाएं पूर्वी राज्यों में जो उद्योग है उसके यहां हैं, पूरे देश को Oxygen की जरूरत थी, अगर उस समय पूरब के लोग कहकर बैठ जाते, Oxygen हम नहीं दे सकते, हमारे लोगों की जरूरत है, देश को कुछ नहीं मिलेगा, क्या होता देश का? उन्होंने संकट झेलकर भी देश को Oxygen पहुंचाया। देश के अंदर ये भाव तोड़ने का क्या प्रयास हो रहा है। क्या इस प्रकार से देश को कि हमारा टैक्स, हमारी मनी, किस भाषा में बोला जा रहा है। देश के भविष्य के लिए नया खतरा पैदा करने वाली बात होगी। देश को तोड़ने के लिए नए-नए narrative खोजना बंद कर दीजिए। देश को आगे बढ़ना है, देश को एक साथ लेकर चलने का प्रयास कीजिए।

**मेरी गारंटी है गरीबों के 5 लाख रुपये तक के इलाज की सुविधा आगे भी मिलती रहेगी। मेरी गारंटी है, मोदी की गारंटी है। 80% डिस्काउंट से जो दवाइयां मिल रही हैं, जिसका लाभ मध्यम वर्ग गरीब को मिल रहा है, वो मिलता रहेगा**

पिछले 10 वर्ष नीति और निर्माण के, ये नए भारत की नई दिशा दिखाने के लिए है। जो दिशा हमने पकड़ी है, जो निर्माण कार्य हमने लिए हैं, बीते एक दशक में हमारा पूरा फोकस, बेसिक सुविधाएं जरूर मिले, उस पर हमारा ध्यान केंद्रित रहा है।

## हर परिवार का जीवन स्तर ऊपर उठे

हर परिवार का जीवन स्तर ऊपर उठे, उसके जीवन में Ease of Living बढ़े। अब समय की मांग है— उसकी Quality of Life में हम कैसे हम

सुधार लाए। हम आने वाले दिनों में हमारी पूरी शक्ति, पूरा सामर्थ्य Ease of Living से एक कदम आगे बढ़कर के Quality of Life की तरफ हम बढ़ाना चाहते हैं, हम उसके लिए जाएंगे।

आने वाले 5 वर्ष Neo Middle Class जो गरीबी से निकलकर बाहर आए हैं, ऐसे Neo Middle Class को नई ऊंचाई और सशक्त बनाने के लिए हम अनेक विविध कार्यक्रम पहुंचाने के लिए, पूरा प्रयास करने वाले हैं। इसलिए हमने सामाजिक न्याय का जो मोदी कवच दिया है ना, उस मोदी कवच को और मजबूत बनाने वाले हैं और ताकत देने वाले हैं।

आजकल जब हम कहते हैं कि 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए तो ऐसा कुतर्क दिया जाता है कि 25 करोड़ बाहर आए तो फिर 80 करोड़ को खाना, अनाज क्यों देते हो।

**हमारी सरकार का तीसरा term दूर नहीं है। कुछ लोग इसे मोदी 3.0 कहते हैं। मोदी 3.0, विकसित भारत की नींव को मजबूत करने के लिए पूरी शक्ति लगा देगी**

हम जानते हैं कोई बीमार व्यक्ति हॉस्पिटल से बाहर आ जाए ना तो भी डॉक्टर कहता है कुछ दिन इसको ऐसे-ऐसे संभालिए, खाने में परहेज रखिए, ढिकना करिए, फलाना करिए। क्यों...कभी दोबारा वहां मुसीबत में ना आ जाए। जो गरीबी से बाहर निकला है ना, उसको ज्यादा संभालना चाहिए ताकि कोई ऐसा संकट आकर फिर से गरीबी की तरफ लपक ना जाए। इसलिए उसको मजबूती देने का समय देना चाहिए। इस समय हमने गरीब को मजबूत किया, ताकि वो फिर से वो Neo Middle Class, फिर से वापिस उस नर्क में डूब न जाए। हम 5 लाख रुपये आयुष्मान का देते है ना, उसके पीछे ये एक इरादा है। परिवार में एक बीमारी आ जाए ना, मध्यम वर्ग के आदमी को भी गरीब बनने से देर नहीं लगती है। इसलिए गरीबी से बाहर निकलना जितना जरूरी है, उतना गलती से भी गरीबी की तरफ पीछे न चला जाए उसके लिए ध्यान रखने की आवश्यकता है। इसलिए हम अनाज देते हैं, अनाज देते रहेंगे। किसी को बुरा लगे या न लगे, 25 करोड़ गरीबी से बाहर निकले हैं। Neo Middle Class हुए हैं, लेकिन

मुझे समझ है, मैं वो दुनिया जी करके आया हूं। उनको जरूरत ज्यादा है और इसलिए हमारी ये योजना जारी रहेगी।

देश जानता है और इसीलिए मैंने गारंटी दी है, मेरी गारंटी है गरीबों के 5 लाख रुपये तक के इलाज की सुविधा आगे भी मिलती रहेगी। मेरी गारंटी है, मोदी की गारंटी है। 80% डिस्काउंट से जो दवाइयां मिल रही हैं, जिसका लाभ मध्यम वर्ग गरीब को मिल रहा है, वो मिलता रहेगा।

मोदी की गारंटी है कि किसानों को जो सम्मान निधि मिल रही है, वो सम्मान निधि चालू रहेगी, ताकि विकास की यात्रा में वो ताकत के साथ जुड़ जाए।

गरीबों को पक्के घर देने का मेरा अभियान है। अगर परिवार बड़ा होता है, नया परिवार बनता है। पक्के घर देने का मेरा कार्यक्रम जारी रहेगा। नल से जल योजना, मेरा पक्का इरादा है और मेरी गारंटी है कि नल से जल देंगे। हमें नए शौचालय बनाने की जरूरत पड़ेगी, तो मेरी पक्की गारंटी है, हम जारी रखेंगे। ये काम सारे तेजी से चलेंगे, क्योंकि विकास का जो रास्ता, विकास की जो दिशा हमने पकड़ी है, इसको हम किसी भी हालत में जरा भी धीमी नहीं होने देना चाहते।

> आने वाले पांच साल आप देखना कोई भी international खेल competition ऐसी नहीं होगी, जिसमें भारत के झंडे हर जगह पर न फहराते हों

## मोदी 3.0, विकसित भारत की नींव को मजबूत करने के लिए पूरी शक्ति लगा देगी

हमारी सरकार का तीसरा term दूर नहीं है। कुछ लोग इसे मोदी 3.0 कहते हैं। मोदी 3.0, विकसित भारत की नींव को मजबूत करने के लिए पूरी शक्ति लगा देगी।

अगले पांच साल में भारत में डॉक्टरों की संख्या पहले की तुलना में अनेक गुना बढ़ेगी। मेडिकल कॉलेजों की संख्या बढ़ेगी। इस देश में इलाज बहुत सस्ता और सुलभ हो जाएगा।

अगले पांच साल में हर गरीब के घर में नल से जल का कनेक्शन होगा।

आने वाले पांच साल में उन गरीब को पीएम आवास जो देने हैं, एक भी वंचित नहीं रहे, इसका पक्का ख्याल रखा जाएगा। अगले पांच साल सोलर पावर से बिजली बिल जीरो, देश के करोड़ों नागरिकों को बिजली बिल जीरो और ठीक अगर आयोजन करेंगे तो अपने घर पर बिजली बनाकर बेच करके कमाई कर पाएंगे, ये अगले पांच साल का कार्यक्रम है।

अगले पांच साल देश में पाइप से गैस के कनेक्शन, पूरे देश में नेटवर्क बनाने का भरपूर प्रयास किया जाएगा।

आने वाले पांच साल हमारी युवा शक्ति का दम पूरी दुनिया देखेगी। आदरणीय सभापति जी, हमारे युवा स्टार्टअप, युवाओं के यूनिकॉर्न, इसकी संख्या लाखों में होने वाली है। इतना ही नहीं Tier 2, Tier 3 cities नए-नए स्टार्टअप से उसके एक नई पहचान के साथ उभरने वाला है। ये मैं पांच साल का चित्र मेरे सामने देख रहा हूं।

**Green Hydrogen अभियान से हम दुनिया के बाजार को लालायित करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। हमारा Green Hydrogen ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने का सामर्थ्य रखेगा**

Reserve Funding उसकी वृद्धि का प्रभाव आप देखना, पिछले सात दशक में जितने Patent नहीं हुए हैं उतने रिकॉर्ड Patent फाइल होने का दिन आने वाले पांच सालों मैं देख रहा हूं।

आज मेरे मध्यम वर्ग के लाखों बच्चे विदेशों में पढ़ने के लिए चले जाते हैं। मैं वो स्थिति लाना चाहता हूं कि मेरे बच्चों के लाखों रुपए बच जाएं। मेरे देश के मध्यम वर्ग के सपने पूरे हों। Best से Best University मेरे देश में हो। उच्चतम शिक्षा उनको मेरे देश में मिले और मेरे बच्चों का, उनके परिवार का पैसा बचे इसलिए मैं कह रहा हूं।

आने वाले पांच साल आप देखना कोई भी international खेल competition ऐसी नहीं होगी, जिसमें भारत के झंडे हर जगह पर न फहराते हों। मैं ये देखने वाला हूं पांच साल खेल जगत के अंदर दुनिया में भारत के युवा की शक्ति की पहचान होते हुए।

आने वाले पांच साल में भारत का पब्लिक ट्रांसपोर्ट पूरी तरह ट्रांस्फॉर्म होने वाला है। अगले पांच साल में गरीब और मिडिल क्लास को तेल और शानदार यात्रा की सुविधाएं बहुत आसानी से मिलने वाली हैं। तेज मिलने वाली हैं, पूरी ताकत से बहुत सुविधाएं मिलने वाली हैं। अगले पांच साल में देश बुलेट ट्रेन भी देखेगा और देश वंदे भारत ट्रेन का विस्तार भी देखेगा।

अगले पांच साल में 'आत्मनिर्भर भारत' का अभियान नई ऊंचाई पर होगा। देश हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर होता नजर आएगा।

आने वाले 5 साल में मेड इन इंडिया, सेमीकंडक्टर दुनिया में हमारी गूंज होगी। इलेक्ट्रॉनिक के हर goods में वो चिप होगी, जिसमें किसी न किसी भारतीय का पसीना होगा।

दुनिया के इलेक्ट्रिक बाजार में, इलेक्ट्रॉनिक बाजार में एक नई गति का सामर्थ्य आने वाले पांच साल में देश देखेगा।

## हमारा Green Hydrogen ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने का सामर्थ्य रखेगा

आज देश लाखों करोड़ों रुपये का तेल इम्पोर्ट करता है। अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए हम ज्यादा से ज्यादा आत्मनिर्भर बनने की दिशा में काम करेंगे और मुझे विश्वास है, हम ऊर्जा जरूरतों पर जो dependency है वो कम करने में सफल होंगे। इतना ही नहीं, Green Hydrogen अभियान से हम दुनिया के बाजार को लालायित करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। हमारा Green Hydrogen ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने का सामर्थ्य रखेगा। इथेनॉल की दुनिया में हम तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। हम 20 परसेंट का लक्ष्य प्राप्त करके हमारे लोगों का ट्रांसपोर्टेशन सस्ता हो, इसकी व्यवस्था करेंगे।

> मैं वो दिन दूर नहीं देखता हूं, जबकि आने वाले पांच सालों में दुनिया के बाजार में सुपर फूड के रूप में मेरे गांव के छोटे-छोटे के घर में पैदा हुआ मिलेट श्रीअन्न दुनिया के बाजार में उसकी प्रतिष्ठा होगी, सुपरफूड की प्रतिष्ठा होगी

जब मैं 20 परसेंट इथेनॉल की बात करता हूं, उसका सीधा लाभ मेरे देश के किसानों को होने वाला है, किसानों को एक नई प्रगति मिलने वाली है। हम कृषि प्रधान देश तो कहते हैं, लेकिन आज भी हजारों करोड़ रुपयों का खाने का तेल हमें बाहर से लाना पड़ रहा है। हमारे देश के किसानों पर मुझे भरोसा है और मुझे पक्का विश्वास है, जो नीतियों लेकर हम चलते हैं edible oil में, मेरा देश बहुत ही जल्द 5 साल में आत्मनिर्भर हो जाएगा, और जो पैसा बचेगा, मेरे देश के किसान की जेब में जाएगा, जो आज विदेश के बाजार में जाता है।

केमिकल की खेती के कारण हमारी धरती मां को बहुत नुकसान हो रहा है। आने वाले पांच साल में नेचुरल फार्मिंग की तरफ देश के किसानों को ले जाने में हम सफलतापूर्वक आगे बढ़ेंगे। एक नई जागृति का काम होगा, हमारी धरती मां की भी सुरक्षा होगी।

नेचुरल फार्मिंग बढ़ने से दुनिया के बाजार में भी हमारी उत्पादों की ताकत बढ़ने वाली है।

यूएन के माध्यम से मैंने मिलेट का अभियान चलाया। श्रीअन्न के नाते आज हमने उसको पहचान दी है। मैं वो दिन दूर नहीं देखता हूं, जबकि आने वाले पांच सालों में दुनिया के बाजार में सुपर फूड के रूप में मेरे गांव के छोटे-छोटे के घर में पैदा हुआ मिलेट श्रीअन्न दुनिया के बाजार में उसकी प्रतिष्ठा होगी, सुपरफूड की प्रतिष्ठा होगी।

**पांच साल के भीतर-भीतर किसानों की एक नए संगठन की शक्ति और कृषि उत्पादन में वैल्यू की ताकत— ये लाभ मेरे देश के किसानों को अवश्य मिलने वाला है**

ड्रोन खेतों में एक नई किसानों की ताकत बनकर के उभरने वाला है। 15 हजार ड्रोन दीदी का कार्यक्रम ऑलरेडी हम लॉन्च कर चुके हैं। ये तो शुरुआत है, आगे बहुत सफलता दिखती है।

हम नैनो टेक्नोलॉजी को एग्रीकल्चर में लाने के प्रयोग में अब तक सफल हुए हैं। हमने नैनो यूरिया में बहुत बड़ी सफलता पाई है। नैनो डीएपी की दिशा में सफलता पाई है। आज एक बोरी खाद लेकर घूमने वाला किसान एक

बॉटल के खाद से काम चला लेगा, वो दिन दूर नहीं है।

सहकारिता के क्षेत्र में हमनें एक नई मिनिस्ट्री बनाई है। उसके पीछे इरादा है कि सहकारिता का पूरा जन आंदोलन नई ताकत के साथ उभरे और 21वीं सदी की आवश्यकता के अनुसार हमनें दो लाख भंडारण का काम हाथ में लिया है। पांच साल के भीतर-भीतर वो पूरा हो जाएगा। छोटे किसान को भी अपनी पैदावार को रखने की जगह मिल जाएगी। किसान तय करेगा किस भाव से बाजार में बेचना है नहीं बेचना है। उसको जो बर्बाद होने का डर था वो खत्म हो जाएगा और किसान की आर्थिक ताकत बढ़ जाएगी। पशुपालन और मछली पालन, मैं कहता हूं, पक्का नए रिकॉर्ड बनाने वाले हैं। आज हमारे यहां पशुओं की संख्या है, लेकिन दूध की उत्पादन कम है। हम इस रीति को बदल देंगे। फिशरिंग एक्सपोर्ट करने की दुनिया में हम बहुत बड़ी तेजी से विकास करेंगे ये भी मेरा अपना विश्वास है। हमने एफपीओ की रचना का कार्यक्रम, जो प्रारंभ किया है। अनुभव बहुत अच्छा है। पांच साल के भीतर-भीतर किसानों की एक नए संगठन की शक्ति और कृषि उत्पादन में वैल्यू की ताकत ये लाभ मेरे देश के किसानों को अवश्य मिलने वाला है।

**ग्रास रूट लेवल की इकॉनमी में बहुत बड़ा बदलाव, 10 करोड़ स्वयं सहायता में हमारी माताएं-बहनें जुड़ी हों— और तीन करोड़ हमारी लखपति दीदी— ये अपने आप में हमारी बेटियों के उत्कर्ष की गाथा लिख रही हैं**

## भारत एक बहुत बड़ा टूरिस्ट डेस्टिनेशन बनने वाला है

जी-20 की सफलता ने साफ कर दिया है, और दुनिया में कोविड के बाद जो खुलापन आया उस खुलेपन का सबसे बड़ा लाभ हमने देखा है कि विश्व का ध्यान भारत की तरफ गया है और इसलिए एक बहुत बड़ा क्षेत्र टूरिज्म का, आने वाले दिनों में होने वाला है और जो सबसे ज्यादा रोजगार देने वाला है। आज विश्व के कई देश हैं, जिसकी पूरी इकॉनमी टूरिज्म पर निर्भर है। भारत में भी बहुत से राज्य ऐसे बन सकते हैं, जिनकी पूरी इकॉनमी का सबसे बड़ा

हिस्सा टूरिज्म होगा और वो दिन दूर नहीं है, जिन नीतियों को लेकर हम चल रहे हैं भारत एक बहुत बड़ा टूरिस्ट डेस्टिनेशन बनने वाला है।

जिसका हिसाब-किताब पहले बहुत कम हुआ करता था, जिसकी बातें सुनकर हमारा मजाक उड़ाया जाता था। जब मैं डिजिटल इंडिया की चर्चा करता था। जब मैं फिनटेक की चर्चा करता था, तब मैं जरा आउट ऑफ वर्क बातें कर रहा हूं ऐसा लोगों को लगता था। आउट डेटा सोच वालों के लिए सामर्थ्य का अभाव था, लेकिन मैं पूरे विश्वास से कहता हूं, आने वाले पांच वर्ष डिजिटल इकोनॉमी की दुनिया में भारत का डंका बजने वाला है। भारत एक नई शक्ति बनने वाला है। आज डिजिटल व्यवस्थाएं भारत के सामर्थ्य को बढ़ाने वाली हैं। विश्व मानता है कि AI का सबसे ज्यादा उपयोग करने का सामर्थ्य किसी देश में होगा, तो हिंदुस्तान में होगा। लेटेस्ट से लेटेस्ट टेक्नोलॉजी का उपयोग मेरा देश करेगा।

> विश्व को अचंभित करने की दिशा में हमारे वैज्ञानिक space की दुनिया में भारत को ले जाएंगे, ये मेरा पक्का विश्वास है

## Space की दुनिया में भारत का नाम रोशन हो रहा है

Space की दुनिया में भारत का नाम रोशन हो रहा है। हमारे वैज्ञानिकों का पराक्रम नजर आने वाला है और आने वाले पांच साल का जो कार्यक्रम है ना, मैं आज उसको शब्दों में बयां नहीं करना चाहता हूं। विश्व को अचंभित करने की दिशा में हमारे वैज्ञानिक space की दुनिया में भारत को ले जाएंगे, ये मेरा पक्का विश्वास है।

ग्रास रूट लेवल की इकॉनमी में बहुत बड़ा बदलाव, 10 करोड़ स्वयं सहायता में हमारी माताएं-बहनें जुड़ी हों— और तीन करोड़ हमारी लखपति दीदी— ये अपने आप में हमारी बेटियों के उत्कर्ष की गाथा लिख रही हैं।

ऐसे अनेक विविध क्षेत्र हैं, जिस क्षेत्र में मैं साफ देख रहा हूं आने वाले पांच साल भारत कभी अनसुना करते थे, स्वर्णिम युग था, मुझे वो दिन दूर दिखते जब पांच साल में वो मजबूत नींव आएगी और 2047 तक पहुंचते-पहुंचते, यह देश उस स्वर्णिम युग को फिर से जीने लगेगा। इस विश्वास के साथ,

विकसित भारत यह शब्दों का खेल नहीं है। यह हमारा कमिटमेंट है और इसके लिए हम समर्पित भाव से लगे हैं। हमारी हर सांस उस काम के लिए है, हमारी हर पल उस काम के लिए है, हमारी सोच उस काम के लिए समर्पित है। उसी एक भावना के साथ हम चले हैं, चल रहे हैं, चलते रहेंगे और देश आगे बढ़ता रहेगा, यह मैं आपको विश्वास देता हूं। आने वाली सदियां इस स्वर्ण काल को इतिहास में अंकित करेगी। ये विश्वास मेरे मन में इसलिए है, देश की जनता का मिजाज मैं भली-भांति समझ पाता हूं। देश ने बदलाव के दस साल के अनुभव को देखा है। एक क्षेत्र में जो बदलाव देखा है, वो तेज गति से बदलाव जीवन के हर क्षेत्र में, नई ताकत प्राप्त होने वाली है और हर संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाना— यह हमारी कार्यशैली का हिस्सा है।

इस सदन में आप सबने जो विचार रखे, उसके कारण देश के सामने सत्य रखने का जो मुझे अवसर मिला और डंके की चोट पर सत्य रखने का अवसर मिला और सदन की पवित्रता के बीच रखने का अवसर मिला है, संविधान की पूरी साक्ष्य के सामने विचार रखने का अवसर मिला है। मुझे विश्वास है कि देश जिनकी वारंटी खत्म हो गई है उनकी बातें सुन नहीं सकता है। जिसकी गारंटी की ताकत देखी है, उसके विचारों पर विश्वास करते हुए आगे बढ़ेगा।

मैं फिर एक बार, आदरणीय सभापति जी, आपका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं और आदरणीय राष्ट्रपति जी को मेरी तरफ से उनके व्याख्यान के लिए आदरपूर्वक अभिनंदन और आभार व्यक्त करते हुए मैं मेरी वाणी को विराम देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

❑❑❑

**श्री जगत प्रकाश नड्डा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लोकसभा में माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर जवाब देते हुए 'विकसित भारत निर्माण' की दिशा में हमारी सरकार की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

'विकसित भारत संकल्प यात्रा' और 'मोदी की गारंटी' को देशभर से मिल रहा विराट समर्थन व अटूट विश्वास राष्ट्रोत्थान के हमारे प्रयासों को बल प्रदान कर रहे हैं।

युवा, महिला, किसान व गरीबों को सशक्त करने को समर्पित सरकार की कल्याणकारी नीतियों ने जन-जन को आत्मविश्वास से परिपूर्ण किया है।

जनता का पूरा आशीर्वाद भाजपा और एनडीए को मिलेगा।

अबकी बार 400 पार!

05 फरवरी, 2024

**श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री**

राष्ट्रपति जी का भाषण एक प्रकार से तथ्यों के आधार पर, हकीकतों के आधार पर प्रस्तुत दस्तावेज़ है, जिसे देश के सामने राष्ट्रपति जी ने रखा है। इस पूरे दस्तावेज़ को आप देखेंगे तो उन हकीकतों को समेटने का प्रयास किया है, जिससे देश किस स्पीड से प्रगति कर रहा है, किस स्केल के साथ गतिविधियों का विस्तार हो रहा है, उसका लेखा-जोखा राष्ट्रपति जी ने प्रस्तुत किया है। आदरणीय राष्ट्रपति जी ने भारत के उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखते हुए चार मजबूत स्तंभों पर हम सबका ध्यान केंद्रित किया है और उनका सही-सही आकलन है कि देश के चार स्तम्भ जितने ज्यादा मजबूत होंगे, जितने ज्यादा विकसित होंगे, जितने ज्यादा समृद्ध होंगे, हमारा देश उतना ही समृद्ध होगा, उतना ही तेजी से समृद्ध होगा

05 फरवरी, 2024

**भाजपा प्रकाशन विभाग**
6-ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002